कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

सेवा के हित, किया समर्पित,
जीवन का हर पल ।
याद करें गुण, करें अनुकरण,
जीवन बने सफल ।।

सेवाव्रती विशेषांक

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष - 28 अंक - 4

अक्टूबर-दिसम्बर 2018 (विक्रम संवत् 2074)

सम्पादक

स्नेहलता बैद

–सम्पादन सहयोग–

तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :

161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग

2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता-7

दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :

29, वार्ड इन्सटीच्युशन स्ट्रीट

(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)

कोलकाता-6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :

24/25, डबसन रोड, 1 तल्ला

हावड़ा-1, दूरभाष-2666 2425

–प्रकाशक–

विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, on behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata-700 007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata-700 005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- संपादकीय 2
- शुभाशंषा 3-4
- राष्ट्र मन्दिर की नींव के पत्थर... 5
- जिनका स्मरण मात्र है प्रेरणा.... 6
- ध्येयनिष्ठ समर्पित जीवन... 8
- ऐसे थे हम सबके ओमप्रकाश जी अग्गी... 9
- सौ.ठमाताई अनंत पवार... 12
- बसन्तराव की ... 14
- सेवापथ के अनथक पथिक.... 15
- मदन बाबू : समाज समर्पित संस्थान... 16
- मातृहृदया मानसी राय सरकार... 17
- भक्तोराम : एक आदर्श कार्यकर्ता... 18
- पद्मश्री लक्ष्मी कुट्टी अम्मा.... 19
- दीप निष्ठा का जले... 21
- डॉ. राजेन्द्र वासुदेवराव 22
- कार्यकर्ताओं के... 24
- भाषा की रक्षा भी पहचान... 25
- कर्मयोगी श्री रामचंद्र खराड़ी 27
- श्री श्री श्यामानंद ब्रह्मचारी जी... 28
- वनवासियों के बीच कार्य कर..... 28
- राघव राणा ... 29
- कोलकाता-हावड़ा महानगर.... 30
- अच्चम्मा : जनजाति की एक कर्मठ ... 31
- बारीपाड़ा के योद्धा चैतराम... 32
- सर्वात्मना समर्पित व्यक्तित्व ... 36
- सेवा के पर्याय कृतिवास महतो... 38
- अभिनन्दन... 39
- नागालैण्ड में कल्याण आश्रम ... 40
- अनुकरणीय.. 41
- साधारण छवि... 42
- सेवा की सौरभ बिखेरती... 43
- **Nomination Form...** **45**
- **Palliyara Raman The Living ...** **46**
- **Discovering The Child In You...** **47**
- **Strive For Education....** **47**
- बोधकथा : क्षमा और प्रेम की शक्ति... 48
- कविता : कंटकमय इस राह में 48

संपादकीय...

स्वयं प्रेरणा से माता की सेवा का व्रत धारा है

भारतीय संस्कृति में सेवा का विशेष महत्व है। अनादिकाल से भारतीय मानव की कामना रही है-

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्ग नापुनर्भवम।
कामये दु:खतप्तानां प्राणिनाम् आर्तिनाशनम्।।

मुझे राज्य का मोह नहीं है, स्वर्ग की कामना नहीं है, मोक्ष प्राप्ति की भी इच्छा नहीं है। मेरी केवल यही कामना है कि मैं दु:खी लोगों के दु:खों का निवारण कर सकूँ। स्वामी रामकृष्ण परमहंसदेव का प्रसिद्ध उद्‌बोधन है, **शिवभावेय जीव सेवा**। वे कहते थे जीवों पर दया करने का भाव उचित नहीं है। जीव को शिव परमात्मा मानकर उसकी सेवा करनी चाहिए। अंग्रेजी में सेवा के लिए प्रति शब्द है सर्विस। यद्यपि 'सेवा' और 'सर्विस' का दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं। सर्विस करने वाले लोग अक्सर समाज में फैले अभाव का लाभ लेकर या लोगों को प्रलोभन देकर स्वयं के द्वारा की गई सहायता के बदले में धर्मान्तरण भी करवाते हैं। वे इसे सेवा समझते हैं। किन्तु अपने हितों का चिंतन करना सेवा नहीं हो सकती। सभी लोग सुखी रहें और सभी को निर्भय, निरामय जीवन मिले, इस हेतु सभी से सम्पर्क करना और आवश्यक समर्पण करना ही सेवा है। अभावग्रस्तों और पीड़ितों को स्वावलम्बी बनाकर उन्हें समर्थ बनाना ही सही मायने में सेवा है। यही सेवा का असली मर्म है। यह सेवा भारत का सांस्कृतिक स्वभाव है। हमने धारण किया है इसे। हमारी तमाम प्रार्थनाएँ, उपवास और रीति-रिवाज तब तक बेकार हैं जब तक कि हम सभी मनुष्यों और जीवों के प्रति एक तरह के जीवन्त अपनापे का अनुभव नहीं करते। संस्कृति के इस मूल्य को अपने जीवन में आत्मसात् करने वाले अनेक सेवाव्रती, समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में सेवा का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। सुदूर वनों में जीवन की सामान्य आवश्यकताओं से वञ्चित तथा शोषण एवं उत्पीड़न के शिकार, शिक्षा एवं चिकित्सा जैसी मूलभूत सुविधाओं से दूर वनवासियों के बीच सेवा कार्य करना अपेक्षाकृत अधिक कठिन है। किन्तु कल्याण आश्रम के प्रयासों के कारण सहस्त्रों कार्यकर्ता बिना किसी नाम, यश, पद की कामना के सुदूर वनवासी क्षेत्रों में अहर्निश सेवा एवं संगठन कार्यों में जुटे हैं। वनक्षेत्रों में दिखाई देने वाली दुर्बलताएँ, समस्याएँ, पिछड़ापन, अभाव आदि बातें इन्हें व्यथित पीड़ित करती हैं। ऐसे ही सेवाव्रतियों को समर्पित है कल्याण भारती का यह विशेषांक। प्रतीक रूप से चंद कार्यकर्ताओं का जीवनवृत्त इस विशेषांक में समेटने की कोशिश है। हमारा प्रयास तो नदी में से एक अंजुरी पानी लेने जैसा कहा जा सकता है। संकोचपूर्वक हम स्वीकार करते हैं कि न तो सभी कार्यकर्ताओं को सूचीबद्ध कर पाए हैं, न ही इस विशेषांक में वर्णित कार्यकर्ताओं की विशेषताओं को ठीक से बता पाए हैं। सीमित क्षमताओं और सीमित साधनों में जो बन पड़ा वही आपके समक्ष प्रस्तुत है। हम आभारी हैं उन रचनाकारों के जिनकी रचनाएं इस विशेषांक में संग्रहित की गई हैं। स्मारिका के सुहृद विज्ञापनदाताओं के भी हम आभारी हैं। स्मारिका के लिए सामग्री जुटाने में अ.भा. उपाध्यक्ष मा.कृपा प्रसाद सिंह, प्रचार-प्रसार प्रमुख प्रमोद पेठकर, संगठन मंत्री श्री अतुल जोग ने निष्ठापूर्ण श्रम किया है। सभी के प्रति आंतरिक आभार। पूरी सावधानी के बाद भी त्रुटियाँ रह जाना संभव है, इसके लिए हम अग्रिम क्षमाप्रार्थी हैं। स्मारिका के लिए आपकी सम्मति और सुझाव का हमारा मार्गदर्शन करेंगे। इति शुभम् ❑

- स्नेहलता बैद

Phone : (07763) 223253, 2
Fax : (07763) 220885
Registration : 79, Date : 09-10-1956

AKHIL BHARATIYA VANVASI KALYAN ASHRAM
P.O. & DIST. : JASHPUR NAGAR (CHHATISHGARH) PIN: 496 331

शुभाशंषा

परम आदरणीय स्नेहलता बैद जी
संपादिका
कल्याण भारती
पूर्वांचल कल्याण आश्रम, कोलकाता

दूरभाष वार्ता के द्वारा ज्ञात हुआ कि इस वर्ष 16 दिसम्बर 2018 को कोलकाता-हावड़ा महानगर के वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर **'कल्याण भारती'** का **'सेवाव्रती विशेषांक'** प्रकाशित हो रहा है। अत्यंत आनन्द हुआ। समाज की सेवा करते हुए देश की सेवा करने वाले ऐसे कई महानुभाव हैं जिन्होंने अपने जीवन का दान कर दिया है। वे प्रसिद्धि पराङ्मुख होकर समाज की सेवा में लगे हुए हैं जिनके विषय में समाज को जानकारी नहीं है। वे नर सेवा नारायण सेवा के भाव से काम में लगे हुए हैं। ऐसे जीवन व्रतियों की जानकारी समाज को हो यह परम आवश्यक हो जाता है। 'कल्याण भारती' ने ऐसे जीवन व्रतियों के जीवन को समाज के सामने लाने का बीड़ा उठाया है, यह अत्यंत स्तुत्य कार्य है।

आशा है आप कल्याण भारती के इस विशेषांक द्वारा सेवाव्रती महानुभावों के जीवन को समाज के सामने लाने में यशस्वी होंगी। आप इस विशेषांक के सम्पादन एवं प्रकाशन में तथा 16 दिसम्बर 2018 को सम्पन्न होने वाले कोलकाता-हावड़ा महानगर के वार्षिकोत्सव को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने में सफल होंगे, इस हेतु हमारी हार्दिक मंगल शुभकामनाएँ।

जगदेवराम उरांव
अध्यक्ष
अ.भा. वनवासी कल्याण आश्रम

Phone : (07763) 223253, 2
Fax : (07763) 220885
Registration : 79, Date : 09-10-1956

AKHIL BHARATIYA VANVASI KALYAN ASHRAM
P.O. & DIST. : JASHPUR NAGAR (CHHATISHGARH) PIN: 496 331

शुभाशंषा

श्रीमती स्नेहलता बैद
संपादिका
कल्याण भारती (विशेषांक)
कल्याण भवन, 29 वार्ड इंस्टीच्युसन स्ट्रीट
मानिकतल्ला, कोलकाता-700 006

मुझे जानकारी मिली है कि **पूर्वांचल कल्याण आश्रम** का वार्षिकोत्सव 16 दिसम्बर 2018 को मनाया जा रहा है। इस पुनीत अवसर पर कल्याण भारती का **सेवाव्रती विशेषांक** प्रकाशित हो रहा है। इस अंक में वनवासी ग्रामों में विकास कार्य में लगी नवीन प्रतिभाओं को भी संकलित किया जा रहा है। यह सूचना मेरे जैसे वनवासी क्षेत्र में कार्यरत कार्यकर्ताओं के लिए सुखद व उत्साह प्रदान करने वाली है।

नवीन भारत की रचना में आपका यह योगदान उल्लेखनीय होगा। ऐसा मानकर मैं चल रहा हूँ। आपकी इस विषय की कल्पकता को नमन है। भारत गाँवों का देश है और इसका विकास ग्रामीण परिवारों की संपन्नता से जुड़ा हुआ है। श्रद्धेय बालासाहब देशपाण्डे, नानाजी देशमुख, दीनदयाल उपाध्याय व महात्मा गाँधी की सोच को इस अंक से बल मिलेगा, ऐसा मानकर चल रहा हूँ। कल्याण भारती के इस विशेषांक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ। सादर...

कृपा प्रसाद सिंह
उपाध्यक्ष
अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम

राष्ट्र मन्दिर की नींव के पत्थर : बसन्तराव भट्ट

शंकरलाल अग्रवाल
अखिल भारतीय नगरीय कार्य प्रमुख

बच्चों सी सरलता, ऋषियों सी सहजता, फूलों सी मुस्कान और मक्खन सा कोमल दिल। यही चित्र बनता है ना किसी देव-तुल्य मनस्वी का। ना देखा हो किसी ने बसन्त दा को, तो वह विश्वास ही ना करे कि इस घोर कलयुगी मारकाट भरी परिस्थितियों में ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है। असामान्य व्यक्ति थे बसन्त दा। उनके व्यक्तित्व के दिव्य दैवीय गुणों को शब्दों की सीमा में समेटना नितांत असंभव है। जंगल के फूल की तरह वह दिव्यता अपने मनमोहक स्वरूप को समेट कर तिरोधान हुई, मगर उसकी सुगन्ध अनगिनत सांसों को अब भी सुवासित किए है। 1977 में कल्याण आश्रम का कार्य जशपुर की सीमाओं को लांघकर देशव्यापी हुआ। बंगाल सहित उत्तर पूर्वांचल का दायित्व बसन्त दा पर आया तब से उन्होंने देश के पूर्वी भाग में एक-एक कर सभी प्रान्तों में अपने आश्रम कार्य का श्रीगणेश किया। बंगाल, असम, अरुणाचल, त्रिपुरा, मणिपुर, मेघालय, नागालैण्ड, मिजोराम, अन्दमान, सिक्किम - सभी प्रान्तों में बसन्त दा पहले गये, लोगों से सम्पर्क किया और समितियाँ बनाई, बाद में कार्यकर्ता भेजकर कार्य की शुरुआत करते थे। उस समय छात्रावासों के लिए धन-संग्रह हेतु निकलते तो उनका धैर्य देखने लायक होता। ऊँची धोती, घिसी चप्पलें, भूखे पेट हाथ में झोला लिए बड़ाबाजार की गद्दियों के बाहर इन्तजार रत बैठे रहते। घंटा डेढ़ घंटा इन्तजार के बाद 100-50 रुपए मिलते, फिर भी न कोई शिकायत न मलाल! सामान्य सी राशि के लिए इतना कठोर श्रम; किसी गहरी साधना से कम नहीं है। गीता का समत्व योग जैसे साध लिया हो उन्होंने-''**सुख दुःखे समे कृत्वा, लाभालाभौ जयाजयौ। ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापं वाप्स्यसि।**'' इस मंत्र को दोहराने वाले, इसकी व्याख्या करने वाले तो अनेक मिल सकते हैं; किन्तु इसे जीने वाले कितने मिलेंगे? सोच कर हैरानी होती है कि ऐसा स्थितप्रज्ञ योगी हमारे बीच 87 साल बिता गया और हम अपने स्वभाव के दोषों का परिमार्जन तक ना कर सके! उपदेश तो उन्होंने कभी दिया नहीं। कभी अपने लिए कुछ नहीं चाहा, कभी अपनी कोई असुविधा नहीं जताई। अपने ज्ञान और अनुभवों का बखान कभी नहीं किया। कल्याण आश्रम के अधिकारी कार्यकर्ताओं की कतार में अन्यतम थे बसन्त दा। 87 वर्ष की उम्र और लम्बी बीमारी के बावजूद स्वभाव की सहज कोमलता दुर्लभ संयोग है यह। गुस्सा तो जैसे कभी आता ही नहीं था, चिड़चिड़ेपन की छाया भी किसी ने नहीं देखी उनके चेहरे पर। आने वाले उनकी तबियत के बारे में पूछते तो मुस्कुराकर उसका ही हालचाल पूछने लगते बसन्त दा। कार्यकर्ताओं के परिवार की चिन्ता, स्वास्थ्य और मन का हालचाल जानना उनके स्वभाव में था। सिर्फ जुबानी जमा-खर्च नहीं बल्कि कार्यकर्ता की सुविधा के लिए स्वयं को बार-बार असुविधा में डाल देते थे। बीमार कार्यकर्ता को स्वयं सीढ़ी उतरने-चढ़ने का श्रम ना हो, इसके लिए कुर्सी उठाने वाले युवा कार्यकर्ताओं को प्रेरणा देकर अपनी देखरेख में इलाज करवाते। किसी का दोष नहीं दिखता था उनको, एकदम माँ का सा हृदय पाया था। कार्यकर्ताओं को सात्विक गर्व है कि आज कल्याण आश्रम का जो भव्य भवन दिखाई पड़ रहा है उसकी नींव में बसन्त दा जैसे दिव्यात्मा मूक पत्थर बनकर जमे हैं। हम भी बन जायें उन जैसे ही राष्ट्र मन्दिर की नींव के पत्थर। उनकी स्मृतियों को शत-शत नमन।

जिनका स्मरण मात्र है प्रेरणा

(आवारी गुरुजी का प्रेरक जीवन)

प्रमोद पेठकर
प्रचार प्रमुख, वनवासी कल्याण आश्रम

वनवासी समाज में अस्मिता जागरण करते हुए, सेवा का व्रत धरण कर एक-दो नहीं तो पूरे 61 वर्ष गाँव-गाँव में भ्रमण करने वाले श्री गंगाराम जानु आवारी (आवारी गुरुजी) का एक बहुआयामी व्यक्तित्व था। आवारी गुरुजी का जीवन वनवासी समाज के हितों की चिंता के लिए पूर्णरुपेण समर्पित था। वनवासी का स्वत्व का जागरण यही एकमात्र लक्ष्य था। 5 जुलाई सन् 1919 को महाराष्ट्र के पेठ तहसील के बोरवट गाँव में आवारी गुरुजी का जन्म हुआ। वे 17 वर्ष के थे तब स्कूल बोर्ड की परीक्षा उत्तीर्ण कर उन्होंने शिक्षक के रूप में अपना व्यवसायिक जीवन शुरू किया। 1942 में पेठ तहसील में भीषण अकाल पड़ा। पूज्य ठक्कर बापा की प्रेरणा से गुरूजी ने अकाल सहायता कार्य की जिम्मेवारी स्वीकार की। समाज सेवा के इस कार्य हेतु उन्होंने अपनी नौकरी भी त्याग दी। डांग सेवा मंडल, इस स्वयंसेवी संस्था के माध्यम से वे सेवाकार्य में कार्यरत हुए। 1942 से 1947 यह स्वतंत्रता प्राप्ति का अंतिम दौर रहा, उस समय आपने स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया। मालेगाँव का चुनावी क्षेत्र जनजातियों का आरक्षित मतक्षेत्र रहना चाहिए, इस हेतु उन्होंने बहुत प्रयास किये। उन्होंने 1950 में राजनीति से निवृत्त होकर समाजकार्य का संकल्प लिया। धरमपुर संस्थान के कर्मचारी तथा साहूकारों की ओर से वनवासी समाज पर यदि अन्याय होता है तो उस संघर्ष में वे सदा अग्रसर रहे। इस काम में उन्होंने एक बात का विशेष ध्यान रखा की जनजाति और गैर-जनजाति समाज में मनमुटाव न हो। *यह उनकी विशालहृदयता का परिचायक है। वनवासी समाज की परम्परा, रीतिरिवाज श्रेष्ठ है। घर-घर में संस्कारी जीवन है। इस बात का उनका अपना स्वयं का चिंतन और संशोधन था। उसके वे अध्यासक रहे। सन् 1954 में गुरुजी ने **'आदिवासी परम्परा'** नाम से एक पुस्तक लिखी थी। उन्होंने वनवासी परम्परा, लोकगीत, पूजापद्धति, सम्पूर्ण समाज के साथ उसकी समानता, वन क्षेत्र में मिलने वाली औषधियाँ इस पर गहन अध्ययन किया। आपने ग्रामीण बोली भाषाओं के 5000 शब्दों का शब्दकोष बनाया था।*

आवारी गुरूजी

एक बार गुरुजी बीमार हुए तो एक ग्रामीण वैद्य की औषधि काम आई। तब से उनका वनौषधि पर विश्वास बढ़ा। उनका एक विद्यार्थी था - रामा रावजी सापटे। बहुत छोटी आयु में उसका वनौषधि पर बहुत अच्छा अध्ययन था। गुरूजी ने वनौषधि के लिये उसे अपना गुरु बनाया। रामा सापटे गुरुजी से आयु में छोटा था अत: जब कभी मिलते तो रामा गुरुजी के पांव छूते परन्तु गुरूपूर्णिमा के दिन गुरुजी उसके पांव छूते और गुरुदक्षिणा देकर संतुष्टि पाने की बात कार्यकर्ताओं को आज भी स्मरण है। 'गुरु-शिष्य परम्परा' का कैसा अनूठा उदाहरण! रामा के साथ रहकर उन्होंने कई वनौषधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की। आवारी

गुरुजी के पास 650 से अधिक वनौषधियों की जानकारी थी। कोयम्बटूर में वनौषधियों के लिए एक संस्था है, कई वर्षों तक गुरुजी उसके मार्गदर्शक रहे। महाराष्ट्र के आयुर्वेद सेवा संघ के सहयोग से कल्याण आश्रम ने वनौषधि के बारे में 'औषधि रानावनातील' नामक एक मराठी पुस्तक आगे चलकर प्रकाशित की। आज भी महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्र में घूमते हुए किसी वनस्पति के गुणधर्म पर चर्चा होती है तो गुरूजी की याद आती है। जनजाति समाज से जुड़ी समस्याओं की जानकारी, उसके समाधान हेतु सुस्पष्ट चिंतन, रचनात्मक मार्ग से समाज को विकास की ओर ले जाने के उनके प्रयास को देखते हुए वनवासी कल्याण आश्रम के सम्पर्क में आते ही वे प्रदेश अध्यक्ष बने। ग्रामीण क्षेत्र के निवासी, क्षमतावान जनजाति व्यक्ति अपने कार्य के माध्यम से वनवासी समाज का नेतृत्व कर रहे थे। जनजाति क्षेत्र में चल रही राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के सामने साहस के साथ खड़े रहने वाले अध्यक्ष सभी कार्यकर्ताओं की प्रेरणा बने। सन् 1995 का समय था, (जब पेठ तालुका में नक्सलवादी गतिविधि शुरू हो रही है) की जानकारी मिली तो पुलिस कार्रवाई से लेकर समाज जागृति तक सभी प्रकार के प्रयास कर उस पर रोक लगा पाने में आपने बहुत बड़ी सफलता पाई। 1997 में कायरे-सादडपाडा में ईसाईयों द्वारा अनधिकृत चर्च बनाने के कारण गांव में दो गुट बन गये। उस समय विशाल हिन्दू सम्मेलन का आयोजन कर इस गैरकानूनी कृत्य पर रोक लगाने हेतु आपने समाज जागृति की। कई सम्मेलनों में अपने विचार व्यक्त कर वे समाज प्रबोधन करते रहे। उनके स्पष्ट विचार, निर्भीक वाणी, सच बात को कहने का साहस अनेक युवकों की प्रेरणा बन गया। **आज वनवासी कल्याण आश्रम कार्य में कार्यरत कई कार्यकर्ता कहते हैं कि हम आवारी गुरूजी की प्रेरणा से ही इस कार्य में जुड़े हैं। 22 जून 2003 को डॉ. हेडगेवार स्मारक समिति की ओर से आवारी गुरूजी को 'डॉ. हेडगेवार सेवा पुरस्कार' से सम्मानित किया।**

नंदुरबार में आयोजित 'हिन्दू वनवासी अस्मिता सम्मेलन' में उन्होंने कहा कि वनवासी चाहे किसी भी राज्य का क्यों न हो, उसका देव है बड़ादेव, महादेव-पार्वती। तो फिर ये कौन सा धर्म है ? पूज्य शंकराचार्य स्वयं 'वनवासी हिन्दू नहीं हैं', ऐसा नहीं कह सकते। पूज्य शंकराचार्य भी 'वनवासी हिन्दू हैं', इस बात की पुष्टि करेंगे। जिन तथाकथित पंडितों ने कहा कि वनवासी हिन्दू नहीं हैं, वे इस बात को सिद्ध करें। महाराष्ट्र शासन ने एक प्रपत्र निकाला कि जनजाति समाज को सरकारी कागज़ों में अपनी जाति के साथ हिन्दू लिखना आवश्यक नहीं। यानि हिन्दू कोकणा, हिन्दू वारली, हिन्दू कातकरी ऐसा लिखना आवश्यक नहीं केवल कोकणा, वारली, कातकरी लिखना पर्याप्त होगा। समाज में इसकी प्रतिक्रिया देखने को मिली। हम अपनी जाति के साथ हिन्दू क्यों नहीं लिखें ? कहने वाले स्वाभिमानी जनजाति कार्यकर्ता एकत्रित हुए और एक प्रतिनिधि मंडल ने सरकार से भेंट की जिसका नेतृत्व आवारी गुरूजी ने किया। परिणामस्वरूप सरकार को इस प्रपत्र को खारिज करना पड़ा। आवारी गुरूजी न केवल किसी एक विद्यालय के अपितु सम्पूर्ण समाज के 'गुरूजी' थे। मानो उनके विद्यालय में कोई दीवार नहीं थी। 8 जुलाई, 2003 को जब आदरणीय आवारी गुरूजी का दु:खद निधन हुआ तो समाज ने मानो वनवासी अस्मिता के एक रक्षक को खो दिया। वे इस जगत से चले गए परन्तु कार्यप्रेरणा के रूप में आज भी हम सबके बीच ही है, इसमें कोई संदेह नहीं। ❑

ध्येयनिष्ठ समर्पित जीवन :भागचन्द जैन

उम्मेद सिंह बैद
कवि, साहित्यकार

जहाँ न वन हो, न वनवासी एवं न ही कोई वनवासी सेवा प्रकल्प, उस कोलकाता महानगर में भारत के 11 करोड़ वनवासी बंधुओं के प्रति आत्मीयता एवं दायित्वबोध का निर्माण कर देना कोई आसान कार्य नहीं है। वनवासी सेवा-संगठन का कार्य कहने में जितना सरल सहज लगता है, उतना ही मुश्किल है, तपोसाध्य है। यह मुश्किल बहुआयामी है, चौतरफ़ा है। पहली कठिनाई यह कि दोनों भिन्न मानसिकताएं, भिन्न परिवेश, भिन्न जीवन शैलियां और भिन्न आचार-व्यवहार। लेकिन जिसके हौसले बुलंद हों उसे कौन रोक सकता है? दुष्यंत कुमार का शेर है-

कौन कहता है आकाश में छेद नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों।

भागचन्द जैन

प्रत्येक प्रतिकूल परिस्थिति में धैर्यपूर्वक कर्मरत रहने वाले कार्यकर्ता का नाम है श्री भागचन्द जैन। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निष्ठावान स्वयंसेवक होने के कारण उनमें प्रखर राष्ट्रीयता का भाव बचपन से ही था। कल्याण आश्रम के कार्य को अखिल भारतीय स्वरूप मिलने के पश्चात् कोलकाता में वनवासी सेवा एवं संगठन कार्य के बीज वपन से लेकर पल्लवित और पुष्पवित करने का मुख्य श्रेय भागचंद जी को है। घर-घर सम्पर्क करके उन्होंने सहयोग, सामंजस्य, सद्भाव एवं समन्वय के सूत्र के आधार पर संगठन में सक्रियता का माहौल निर्मित किया। समाज में किस व्यक्ति की कैसी उपयोगिता है, इसकी उन्हें सही परख है। विभिन्न समितियों का निर्माण, नियमित बैठकों का आयोजन, अधिकारियों के प्रवास की व्यवस्था, प्रांतीय एवं अखिल भारतीय स्तर के सभी कार्यक्रमों में सम्मिलित होना, साधन संग्रह आदि के द्वारा आप संगठन के लिए समय, शक्ति एवं श्रम का निरन्तर नियोजन करते रहे हैं। आपकी प्रेरणा एवं अथक प्रयत्नों से ही अखिल भारतीय नगरीय प्रमुख श्री शंकरलाल जी को कल्याण आश्रम की बागबाजार इकाई की बैठकों में लाया जा सका। प्रत्येक व्यक्ति के विचारों का यथोचित सम्मान करना आपकी विशेषता है। मतभिन्नता की स्थिति में भी आप मन भिन्नता एवं टकराव की स्थिति पैदा नहीं होने देते। संगठन के वैचारिक आधार एवं उद्देश्य को बहुत ही सहज सरल तरीके से समाज बंधुओं को समझा देते हैं। समिति बैठकों एवं गोष्ठियों में आपके विचार कार्यकर्ताओं को वैचारिक दृष्टि से समृद्ध करते हैं।

भारत के विकास के लिए वनवासी का विकास - इस मंत्र को साकार करने के लिए आप संकल्पबद्ध हैं। आपके सम्पूर्ण जीवन पर आचार्य विष्णुकांत शास्त्री की यह चतुष्पदी खरी उतरती है-

ध्येयनिष्ठ हो अगर समर्पण, विनयपूर्ण हो प्रतिपद,
सहज साधनामय जीवन हो, रामकृपा हो सम्पद,
मेवा पाने की न लालसा हो यदि अपने मन में,
सेवा का छोटा सा पौधा, बन सकता है बरगद।

ऐसे थे हम सबके ओमप्रकाश जी अग्गी

पंकज भाटिया
चिकित्सा प्रमुख, अ.भा.व.क.आश्रम

श्री ओमप्रकाश जी अग्गी
पिता: श्री तोलाराम अग्गी
माता : श्रीमती वसोदेवी अग्गी
जन्म : 28 अगस्त 1928 जन्म स्थान : टोबा टेकसिंह, जिला - लायलपुर (पाकिस्तान)
शिक्षा : स्नातक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रवेश - 1945

अग्गी जी नहीं रहे पर उनका जीवन हमें सदैव प्रेरणा देता रहेगा अग्गी जी वर्ष 1948 के उपरान्त जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बन गए तो उन्हें संयुक्त पंजाब (पंजाब,हरियाणा) में संघ शाखा विस्तार कार्यभार सौंपा गया। तदुपरान्त वर्ष 1960 के आसपास वे भारतीय मजदूर संघ से जुड़ गए और वर्ष 1969 तक पंजाब प्रदेश संगठन मंत्री के दायित्व का निर्वहन किया।

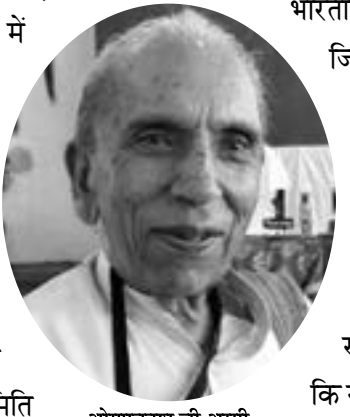
ओमप्रकाश जी अग्गी

संगठन मंत्री का दायित्व

वर्ष 1967 भा.म.संघ के प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन में जो राष्ट्रीय कार्यसमिति बनी उसमें अग्गी जी अखिल भारतीय मंत्री बनाए गए। कानपुर अधिवेशन वर्ष 1970 में पुन: राष्ट्रीय मंत्री निर्वाचित हुए। इसी वर्ष लुधियाना (पंजाब) से उन्हें केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली बुला लिया गया और कार्यालय ही उनका निवास बना। भा.म.संघ का प्रथम केन्द्रीय कार्यालय जब विण्डसर प्लेस (दिल्ली) में श्री हुकमचंद कुशवाहा का सांसद निवास बनाया गया तो वहाँ की प्रारंभिक सारी व्यवस्थाओं को स्थापित करने और उन्हें सुचारु रूप से संचालित करने की जिम्मेवारी का निर्वहन अग्गी जी ने दक्षता एवं अत्यन्त कुशलतापूर्वक किया तत्पश्चात् उन्हें राष्ट्रीय संगठन मंत्री का दायित्व सौंपा गया जिसका उन्होंने भारतीय मजदूर संघ के कटक अधिवेशन (अप्रैल 2008) तक निष्ठापूर्वक और योग्य रीति से निर्वहन किया। उसके पश्चात अ.भा.वनवासी कल्याण आश्रम में **सह हितरक्षा प्रमुख** रूप में मृत्यु पर्यन्त सक्रिय रहे।

प्रारंभिक दायित्व

भारतीय मजदूर संघ की प्रारंभिक अवस्था और जिस कालखंड में अग्गी जी संगठन मंत्री थे तब विभिन्न प्रदेशों व उद्योगों में श्रम संघों का निर्माण तो हो रहा था किन्तु उन्हें एक सूत्र में पिरोने और अखिल भारतीय स्वरूप देने में अग्गी जी के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता इससे भी बढ़कर योगदान यह था कि स्थान-स्थान पर जो नई यूनियनें गठित हो रही थीं और नए-नए कार्यकर्ता खड़े हो रहे थे उन्हें भा.म.संघ की रीति-नीति और कार्य पद्धति से परिचित कराना, तलाशना, तराशना, गढ़ना और संघ विचार में ढालना, यह बड़ी चुनौती थी। अग्गी जी ने प्रान्तश: उद्योगश: अभ्यास वर्गों की रचना करके कार्यकर्ताओं को शिक्षित प्रशिक्षित करने और राष्ट्रवाद से जोड़ने का महत्वपूर्ण काम किया ।

संगठन शिल्पी व कार्यकर्ता निर्माण की कला में निष्णात

केन्द्रीय स्तर पर मा.ठेंगड़ी जी के बाद अग्गी जी दूसरे ऐसे कार्यकर्ता थे, जिन्हें देश भर की यूनियनों की जानकारी और कार्यकर्ताओं का नाम स्मरण था। केवल नाम ही नहीं अपितु कार्यकर्ता के गुण, कर्म, स्वभाव, रुचि, अरुचि कार्य क्षमता और उसके मानस की भी जानकारी रहती थी। कार्यकर्ता की सामाजिक पारिवारिक व आर्थिक स्थिति कैसी है,अग्गी जी इससे भी अवगत रहते थे। उनके लिए यह इसलिए भी संभव था कि अपने देशव्यापी संगठनात्मक प्रयास में अधिकांशतया वे किसी न किसी कार्यकर्ता के घर ही ठहरते थे जिससे उनका पूरे परिवार के साथ परिचय हो जाता था। संगठन कौशल्य में तो वे निष्णात थे ही। साथ ही एक और बात के लिए भी विख्यात थे और वह थी साफ सफाई। **सामाजिक स्तर पर आज जो स्वच्छता अभियान की चर्चा हम सुनते हैं, अग्गी जी ने वर्षों पूर्व इसे निजी तौर पर संगठन में चलाया था। पहाड़गंज (दिल्ली) स्थित केन्द्रीय कार्यालय के दरवाजों, खिड़कियों की धूल झाड़ते, फर्श को धोते और यहाँ तक कि बाथरूम साफ करते हुए भी अनेक कार्यकर्ताओं ने उन्हें देखा है। वे गन्दगी सहन नहीं कर पाते थे और प्रदेश कार्यालयों पर भी साफ-सफाई रहे इसका आग्रह वे बराबर करते थे।** अग्गी जी के इस व्यवहार से कतिपय कार्यकर्ताओं को उनमें आभिजात्य व संभ्रान्तता की झलक दिखाई देती थी किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं था क्योंकि अग्गी जी साफ सफाई करवाते नहीं अपितु स्वयं अपने हाथों गन्दगी साफ करके दूसरों के लिए प्रेरणास्पद उदाहरण प्रस्तुत करते थे।

विदेश प्रवास

देश में तो अग्गी जी ने संगठन कार्य को सुदृढ़ किया ही उन्होंने देश के बाहर विदेशों में भी भा.म.संघ के विचार को पहुँचाया, प्रचार-प्रसार किया। 1980 के दशक में उन्होंने लगातार पाँच वर्षों तक जिनेवा (स्वीटजरलैण्ड) स्थित आईएलओ. विश्व सम्मेलन में भा.म.संघ द्वारा भारतीय श्रमिकों का प्रतिनिधित्व किया। वे अमेरिका, ब्रिटेन,जापान, आस्ट्रेलिया, स्पेन, स्वीडन, पाकिस्तान आदि अनेक देशों में गए और वहाँ श्रमिक सम्बन्धी संगोष्ठियों को संबोधित किया। देश में वे केन्द्रीय श्रम मंत्रालय के अंतर्गत सेफ्टी कौंसिल, प्रोडक्टिविटी कौंसिल तथा सार्वजनिक क्षेत्र की द्विपक्षीय समितियों की बैठकों में भा.म.संघ का प्रतिनिधित्व करते थे।

स्वयं का उदाहरण

अग्गी जी के संगठन मंत्री का कालखण्ड अनेक प्रकार के झंझावातों, संभावनाओं, अपेक्षाओं तथा आकांक्षाओं से भरा हुआ था। जहाँ अग्गी जी कार्यकताओं को भा. म.संघ के झण्डे का आकार क्या है, मंच पर ऊपर या नीचे ध्वज कब और कहाँ लगाना चाहिए, विश्वकर्मा और भारत माता का चित्र किस स्थान पर रखना चाहिए, मंच पर किस-किस कार्यकर्ता को बिठाना चाहिए, नारे कब, कैसे और कौन से लगाने चाहिए, गीत कौन सा और कैसे करवाना चाहिए, भाषण में किन बातों पर ध्यान देना चाहिए और कार्यक्रम की सफलता के लिए क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए इससे भलीभाँति अवगत कराते थे। यह सब बताने के पश्चात् स्वयं मंच से नीचे कार्यकर्ताओं के साथ पंक्ति में बैठ जाते थे। सारा आयोजन सबको साथ लेकर स्वयं करना किन्तु मंच पर महामंत्री व अन्य कार्यकर्ताओं को बिठाना, उनमें आत्म विश्वास तथा नेतृत्व के गुणों का विकास करना, यही किसी भी संगठन मंत्री से अपेक्षित है। और इस कार्य का अग्गी जी ने उत्तम रीति से निर्वहन किया।

आमरण अनशन

भारतीय मजदूर संघ की प्रारंभिक अवस्थाओं में

जिन कार्यकर्ताओं ने त्याग,तपस्या, बलिदान के स्वयं आगे आकर आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किए उसके परिणामस्वरूप संगठन की जड़ें संबंधित कार्यक्षेत्र में जम गई और साथ ही कार्यकर्ता की प्रामाणिकता भी सुदृढ़ हो गई। ऐसे कार्यकर्ताओं के आह्वान पर स्थान-स्थान पर कार्यकर्ता संगठन कार्य और यहाँ तक कि बलिदान के लिए भी आगे आने लगे। अग्गी जी ने भी श्रमिक हित अपने प्राणों की बाजी लगाकर भवानी कॉटन मिल, अबोहर (पंजाब) में 1 से 15 नवम्बर 1968 में आमरण अनशन किया। मिल प्रबन्धन ने अनशन तुड़वाने के लिए प्रशासनिक, पुलिस और तदुपरान्त इलाके के कुख्यात गुण्डों द्वारा दमन चक्र चलाया और भय का वातावरण बनाने का भरसक प्रयास किया किन्तु अग्गी जी के नेतृत्व में श्रमिक निडरतापूर्वक आमरण स्थल पर डटे रहे और पण्डाल को गिराने नहीं दिया। इस आन्दोलन में कैप्टन मंगलसिंह (चण्डीगढ़), उमाशंकर शाह, करतारसिंह राठौर, रामलुभाया बाबा, बलदेव कृष्ण शर्मा, श्याम सिंह चौहान तथा संघ के सभी घटकों ने अभूतपूर्व सहयोग देकर और सभी प्रकार की बाधाओं को पार करते हुए आन्दोलन को यशस्वी बनाया। तदुपरान्त दिल्ली स्थानान्तरण के पूर्व अग्गी जी पंजाब प्रदेश महामंत्री (वर्ष 1969) बनाए गए। इस यशकारक सफल आन्दोलन के पश्चात् पंजाब, हरियाणा के प्राइवेट उद्योगों में भारतीय मजदूर संघ की जड़ें जम गई और वामपंथी तथा अन्य श्रम संगठनों का पराभव प्रारंभ हो गया।

असंगठित क्षेत्र में सक्रिय

सच ही कहा जाता है कि भारत के औद्योगिक मानचित्र में लाल के स्थान पर भगवे रंग को कार्यकर्ताओं ने अपने रक्त से उकेरा है। यह भी सच है कि भा.म.संघ की प्रथम पीढ़ी के ज्येष्ठ श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं के साथ सैकड़ों हजारों अन्य नाम अनाम कार्यकर्ताओं ने भी अपने रक्त से भा.म.संघ की सफलता की कहानी लिखी है।अग्गी जी दीनहीन और दरिद्रता ग्रस्त प्राणियों के प्रति करुणाशील थे। शोषित, वंचित,दबे,कुचले, असहायों को देख द्रवित हो जाते थे।

कदाचित् यही कारण रहा होगा कि नब्बे के दशक में उन्होंने अपना सर्वाधिक समय असंगठित क्षेत्र के पीड़ित श्रमिकों को संगठित करने में लगाया।उस क्षेत्र में अन्याय के प्रतिकार के लिए यूनियनें गठित की और अनेक कार्यकर्ताओं का निर्माण किया भा.म. संघ के संगठन मंत्री पद से जब वे मुक्त हो गए तो संभवतया उनको उनके स्वभाव के अनुसार जहाँ दारिद्रय, दारुण्य, वेदनाओं और अभावों का साम्राज्य है उस वनवासी क्षेत्र में संगठन कार्य सौंपा गया जहाँ वे जीवन की अंतिम साँस तक सक्रिय रहे। आयु के इस पड़ाव (90 वर्ष से ऊपर) पर भी उनकी गतिशीलता, सक्रियता देखते ही बनती थी। अग्गी जी ने जीवन भर चाय का सेवन नहीं किया। भोजन नितान्त सादा शाकाहारी और दिनचर्या नियमित संयमित रहने के कारण वे अपनी आयु से पर्याप्त कम आयु के दिखाई पड़ते थे। वह अपने अंतिम समय तक वनवासी क्षेत्रों में प्रवास कार्यक्रमों की रचना तथा दैनन्दिन गतिविधियों में कार्यकर्ताओं का नेतृत्व करते रहे। कार्यकर्ता निर्माण की कला तथा संगठन शास्त्र के वे ज्ञाता थे और इस संबंध में उन्होंने 'शुक्रनीति' और अनेक छोटी-छोटी पुस्तिकाओं की रचना की है। हमारी परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि प्रभु उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दें। ❑

सौ.ठमाताई अनंत पवार

जनजाति की एक कर्मठ कार्यकर्ता

विश्वास चांदोरकर
कोषाध्यक्ष, वनवासी कल्याण आश्रम, पुणे

हमारे समाज में ज्यादातर लोग प्रवाह के साथ चलने वाले होते हैं, किन्तु कुछ लोग अपनी कर्मठ वृत्ति के कारण प्रवाह के विरुद्ध भी जाना पसंद करते हैं। महाराष्ट्र के कातकरी जनजाति समाज में जन्म लेने वाली सौ.ठमाताई अनंत पवार (एक महिला) को अपने जीवन में अनेक विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा तथा इनका सामना करते हुए वनवासी बांधवों की उन्नति के लिए अपना योगदान दे रही है। वर्तमान में सौ. ठमाताई कोंकण प्रांत, वनवासी कल्याण आश्रम के उपाध्यक्ष पद पर रहते हुए अपने बांधवों के सर्वांगींण विकास के लिए योगदान दे रही है।

सौ.ठमाताई

सौ.ठमाताई का जन्म बीड गाँव ज्यों की तहसील कर्जत, जिला रायगढ़ में एक कातकरी जनजाति परिवार में हुआ। यह क्षेत्र जाम्भिविली (कर्जत-रायगड) के वनबहुल इलाके के समीप है। उस समय इन इलाकों की बस्तियों में अज्ञान, दारिद्रय, अंधश्रद्धा, कुविचार तथा कई बीमारियों का साम्राज्य था। आर्थिक अभाव के कारण उन्हें वर्ष 1983 से कल्याण आश्रम के जाम्भिविली के छात्रावास में रोटी बेलने तथा सेकने का काम करना पड़ता था। छात्रावास प्रमुख डॉ.कुंटे तथा उनकी अर्धांगिनी सौ. कुंटे ने ठमाताई को देवनागरी-मराठी वर्णमाला से परिचित करवाया। इस दम्पति ने उनके मन में पढ़ने-लिखने की इच्छा जगाई। रोटी बनाने के लिये जैसे ही आटा लिया जाता था उस पर वह वर्णमाला का अभ्यास करने लगी; साथ ही साथ सौ.कुंटे काकू ने ठमाताई को भजन गाने के लिए भी प्रेरित किया। शीघ्र ही वे अपने इलाके में रहने वाले बांधवों को भजन गाना सिखाने लगी। रोटियाँ बनाते समय वह अक्षर परिचय करती थी तथा रोटियाँ सेकते समय वह भजन गाने में रुचि लेती थी। वनवासी महिलाओं में बचत करने की आदत डालने में ठमाताई ने पहल की क्योंकि वनवासी पुरुष ज्यादातर समय बेरोजगार हुआ करते हैं और उनमे नशापानी की बुरी आदत के कारण जरूरी खर्चों के लिए बचत का महत्व ठमाताई अपनी साथी महिलाओं को बताती थी। इस तरह महिला बचत गट के गठन के बाद वनवासी महिलाओं में बचत करने की आदत शुरू हो गई। वनवासियों में अंधश्रद्धा का स्थान अहम होने से इसका निर्मूलन करना आवश्यक था। ठमाताई ने कड़ी मेहनत की और वनवासी बांधवों को व्यसनमुक्त एवं अंधश्रद्धा से दूर रखने में काफी हद तक सफल रही।

एक बार ठमाताई बुखार / ज्वर से तप रही थी तथा वह इस दौरान कुछ बक-बक करती रही; उनके

निकटवर्तियों ने तो यह कहना चालू किया कि ठमाताई पर भूत सवार है तो परिवार वालों ने उन्हें किसी भगत या तांत्रिक के पास ले जाना चाहा। किन्तु डॉ. कुंटे काका ने उनकी जांच करवाई और दवाई दी। कुछ दिनों बाद उनका ज्वर उतर गया तथा वे स्वस्थ हो गयी। इसी कारण से डा. कुंटे ने उन वनवासी बांधवों को समझाया कि किसी बीमारी में अच्छे डॉक्टर का इलाज ही वनवासियों को स्वस्थ कर सकता है, तांत्रिक या भगत नहीं। डॉक्टर बीमारी के अनुसार औषधोपचार करते हैं तथा बीमारी से मुक्त करते हैं। इस अनुभव से उस इलाके के वनवासी बांधव भगत के पास इलाज के लिए जाते नहीं लेकिन किसी डॉक्टर से अपना इलाज करवाते हैं। इस तरह वहां के जनजाति समूह में अंधश्रद्धा का निर्मूलन हुआ।

ठमाताई तब तक काफी निडर बन चुकी थी। वह छात्रावास में आने वाले कल्याण आश्रम के पदाधिकारियों से परिचित होने लगी। एक दिन उन्होंने कल्याण आश्रम के किसी वरिष्ठ पदाधिकारी को संगठन की कार्यकर्ता बनने की इच्छा व्यक्त की क्योंकि वह उम्मीद जता चुकी थी कि वनवासी कल्याण आश्रम सही में वनवासी बांधवों के हित के लिए परिश्रम कर रहा है तो कल्याण आश्रम के साथ जुड़ने से अपनी और अपने समाज की उन्नति कर सकेगी। ठमाताई को कल्याण आश्रम की सदस्यता तो मिली पर उन पर जिम्मेदारी भी सौंपी गयी कि वह जनजाति बांधवों की ग्राम समिति का नेतृत्व करें और कातकरी समाज का विकास करें। इस दायित्व के कारण ठमाताई को कल्याण आश्रम के सम्मेलनों में आमंत्रित किया जाता था। तब तक उन्होंने कभी बस या रेल से सफ़र किया ही नहीं था और बार-बार उन्हें न्यौता आने से सफ़र करना उन्हें काफी सरल लगा तथा कुछ सीखने का अवसर प्राप्त होता था। वह अकेले ही पूरे महाराष्ट्र में सफ़र करने लगीं। उनका यह धैर्य और साहस किसी भी महिला के लिए प्रेरक है। वह वर्तमान में कोंकण प्रांत तथा अखिल भारतीय स्तर पर महिला समिति की उच्च पदाधिकारी हैं।

सौ.ठमाताई की खेल-कूद में भी काफी रुचि है। उन्होंने कल्याण आश्रम की खेल-कूद स्पर्धाओं में कई पुरस्कार प्राप्त किये हैं; विशेषत: महिलाओं का शॉटपुट। वर्णमाला सीखने के पश्चात् ठमा ताई अपने ही बांधवों को पढ़ाने लगी व प्रौढ़ शिक्षा वर्ग चलाती रही। इस उपक्रम में उन्हें अपने पतिदेव श्री अनंता से भी प्रोत्साहन मिला। ठमा के अक्षर इतने सुन्दर हैं कि कोई भी उन्हें लिखने के लिए काम पर रखने की इच्छा करता। गृहिणी के नाते वह कल्याण आश्रम के बालकों की माता बनी तथा अतिथियों की ताई। खाना इतनी स्वादिष्ट बनाती हैं कि किसी की भी फरमाइश पर वह उन्हें स्वादिष्ट भोजन खिलाती हैं। उनके द्वारा गाये भजन या गीतों को श्रोता भावपूर्वक सुनते हैं क्योंकि उनका बुलंद स्वर ही उनकी पहचान है। ठमाताई को अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं; उनमे से कुछ का उल्लेख निम्न है।

- सन् 1998 में पुणे मराठी ग्रंथालय का **'जीवन गौरव पुरस्कार'**
- सन् 2001 में उन्हें महाराष्ट्र शासन का **'अहिल्यादेवी होलकर राष्ट्रीय पुरस्कार'** मिला जिसे उन्हें तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम डा. अब्दुल कलाम के कर कमलों से स्वीकारा।
- सन् 2005 में **स्त्री शक्ति पुरस्कार** उन्हें पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के

करकमलों से प्राप्त हुआ।

- सन् 2014 में ज़ी एंटरटेनमेंट के मराठी चैनेल द्वारा उनके सामाजिक कार्य के लिए **ऊंच माझा झोका** पुरस्कार दिया गया।
- सन् 2014 में ठमा ताई को कीर्तनकार **श्रीमती वत्सलाताई रानडे न्यास** का सामजिक कार्य हेतु रु. 2 लाख का पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- सन् 2015 में सरदार जी बी नातू फाउंडेशन का समाज सेवा हेतु पुरस्कार।
- सन् 2018 में उन्हें भारतीय फिल्म इंस्टिट्यूट पुणे से फिल्म **मधुमती पुरस्कार** श्रीमती रिंकू रॉय (जो कि स्वर्गीय फिल्मकार श्री बिमल राय की सुपुत्री है) से प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार मधुमती फिल्म के 60 वर्ष पूरे होने पर किसी जनजाति महिला को दिया गया क्योंकि 60 वर्ष पहले इस फिल्म में एक सामान्य जनजाति महिला ने जनजाति समाज को प्रबोधन करके समाज को बदल डाला था।
- भारत के उप-राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कार। इसके साथ ही उन्हें अनेक छोटे पुरस्कार तथा कार्यक्रमों में सन्मानित किया जा चुका है।
- वह हमेशा ही जनजाति के हितों की चाहने वाली होने से मोर्चा एवं धरना देने में हिचकिचाती नहीं। जब कभी उन्हें सम्मान प्राप्त होता है तो वह हमेशा ही कहती हैं कि पुरस्कारों की तुलना में उन्हें वनवासियों की उन्नति की कामना है।

गत वर्ष पूर्वांचल कल्याण आश्रम, कोलकाता-हावड़ा महानगर के वार्षिकोत्सव में उनके यशस्वी जीवन को **'ठमा'** नाटक के माध्यम से दिखाया गया जिसकी महानगरवासियों ने भरपूर सराहना की। स्वयं ठमा ताई उस कार्यक्रम में उपस्थित थी एवं दर्शकदीर्घा में बैठकर उन्होंने उस नाट्य प्रस्तुति का आनन्द लिया एवं नाटक के अन्तिम दृश्य में उन्होंने अपने मधुर स्वर में **मनुष्य तू बड़ा महान है** गीत का संगान भी किया। उनका सेवापूर्ण आदर्श जीवन हम सभी के लिए प्रेरक है। ❑

बसन्तराव जी की मितव्ययता

बसन्त दा एक बार सिलीगुड़ी के कार्यकर्ता श्री सुनील शाह के साथ ट्रेन से कोलकाता आ रहे थे। सुनील जी भोजन के लिए ऑर्डर देने वाले थे, बसन्त दा ने उनसे पूछा कि पैसा कितना लगेगा? सुनील जी ने बताया कि आप पैसों की चिन्ता ना करें, पैसे मैं दे दूंगा, लेकिन बसन्त दा के बार बार आग्रह पर उनको बोलना पड़ा की रेलवे की पैन्ट्री में निरामिष भोजन का दाम 16 रुपये है, बसन्त दा ने अपने लिए मना कर दिया और बताया कि सामान्यतया एक बार के भोजन में तीन रुपये खर्च होता है। 16 रुपये क्यों खर्च करेंगे? उसमें मेरा 5 समय का भोजन हो जायेगा और बसन्त दा ने खाना नहीं मंगवाया। वे हमेशा फिजूल-खर्च का विरोध करते थे, लेकिन वे कंजूस नहीं थे। उत्तर-पूर्व क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के लिये वे आवश्यक धन की व्यवस्था अवश्य करते थे। समाज के एक-एक पैसे का उपयोग व्यक्तिगत सुविधा के लिए नहीं अपितु वनवासी हित में हो। इसका सदैव ध्यान रखते थे। ❑

अमृत वचन

अगर सफल होने का हमारा इरादा काफी मजबूत होगा तो नाकामी हम पर हावी नहीं हो सकती।

- ए.पी.जे अब्दुल कलाम

अगर आदमी परोपकारी नहीं है, तो उसमें और दीवार पर बने चित्र में क्या फर्क है। -शेख सादी

सेवापथ के अनथक पथिक : मांगीलाल जैन

भागचन्द जैन
उपाध्यक्ष, दक्षिण बंग पूर्वांचल कल्याण आश्रम

1977 में वनवासी कल्याण आश्रम का विस्तार अखिल भारतीय स्तर पर किया गया। संगठन पश्चिम बंगाल में इस कार्य को प्रारंभ करने के लिए मांगीलाल जी को नियोजित किया। आप कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल के सदस्य मनोनित किए गए। तब से लेकर आज तक मांगीलाल जी ने वनवासी सेवा और संगठन कार्यों से मन-प्राण पूर्वक जुड़े हैं। कठिन परिस्थितियों में भी अत्यधिक धैर्य और साहस से कार्य किया। आपका अनुशासित, समर्पित और संवेदनशील जीवन कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणादायक है। लक्ष्य के प्रति घनीभूत आस्था और दायित्व के प्रति दीर्घ दृष्टि इनका स्वभाव है। उल्लेखनीय है कि पूर्वांचल कल्याण आश्रम का संविधान मांगीलाल जी अपनी ऑफिस 23ए, नेताजी सुभाष रोड में बैठकर लिखा। प्रारंभिक दिनों में इन्होंने मा.बसन्तराव भट्ट एवं स्व.मदनलाल अग्रवाला के साथ कार्य विस्तार के लिए कठोर अध्यवसाय किया। वनवासी सेवा और संगठन के जिस विराट कार्य से आप जुड़े हैं उसे सम्पादित करना कोई सरल काम नहीं है। इस कार्य में व्यक्ति को सर्वात्मना लगना पड़ता है। कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण पर 1989 में आप पर वन-बंधु परिषद के महामंत्री का दायित्व आ गया। आज भी मांगीलाल जी नियमित ऑफिस जाते हैं, सहयोगकर्ताओं से नियमित संपर्क कर साधन संग्रह करते हैं। गत् वर्ष आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ हो गए थे। किन्तु रुग्णावस्था में भी वनवासी की चर्चा करते ही उनके चेहरे पर अनिर्वचनीय कांति आ जाती थी, यह निश्चय ही कार्य के प्रति उनके आंतरिक लगाव का प्रमाण है। वे अक्सर कहते हैं कि उनका समय, धन, ज्ञान, अनुभव ईश्वर की सम्पत्ति है। इनको वनवासियों को समर्पित करना ईश्वर को ही अर्पण करना है। यह ईश्वर की ही सेवा है। वनवासी सेवा कार्य इनके लिए कोई शौक या हॉबी नहीं और न ही खाली समय का शगल है। आपके लिए यह कार्य जीवन का ध्येय है। जीवन की सार्थकता और धन्यता है।

मांगीलाल जैन

उम्र के 9वें दशक में भी आपकी कर्मजा शक्ति एवं सक्रियता अक्षुण्ण है। स्वभाव से हँसमुख वाणी से विनम्र और व्यक्तित्व से अत्यंत सरल मांगीलाल जी का जीवन एक आदर्श सेवाभावी कार्यकर्ता का प्रतिबिम्ब है। वर्तमान पीढ़ी के कार्यकर्ताओं के लिए आदर्श हैं। कामना है कि आप **कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः** की उक्ति को चरितार्थ करते हुए स्वस्थ रहें, शतायु हों तथा देश और समाज को अपने कर्तृत्व से समृद्ध करते रहें। ❑

मदन बाबू : समाज समर्पित संस्थान

तरुण विजय
पूर्व राज्यसभा सासंद

स्व. मदनलाल अग्रवालजी के व्यक्तित्व और कृतित्व के विषय में कहना सदैव इसलिए अपर्याप्त और प्राय: कठिन लगता है क्योंकि वे सामान्य व्यक्ति की सीमाओं से भी आगे बढ़कर एक समाज समर्पित संस्थान बन चुके थे। बिहार-झारखण्ड में शायद ही ऐसा कोई अच्छा काम होगा जिसमें मदन बाबू का नाम न जुड़ा हो। **परन्तु सबसे ज्यादा महत्व का कार्य यदि मदनबाबू के हाथ से हुआ है तो वह है देश में वनवासियों के प्रति आत्मीयता और प्रेम जागरण।**

वनवासी समाज ही सर्वोपरि

वनवासियों के प्रति उनका निश्च्छल प्रेम, अनुराग और समर्पण अनुकरणीय है। उन्होंने देश भर का प्रवास कर वनवासियों की समस्याओं पर गहरा अध्ययन किया और यह पाया कि चाहे विदेशी ईसाई मिशनरियों द्वारा किया जाने वाला मजहबी शोषण हो अथवा शहरी लोगों और अधिकारियों का उपेक्षा जनित शोषण, वनवासी समाज तभी आत्मनिर्भर सशक्त और धर्म-रक्षक बन सकेगा जब उसमें संस्कारक्षम शिक्षा का प्रसार भी हो। वनवासियों को संस्कारित करना, उनमें धर्म की ज्योति प्रखर करना और शिक्षा के माध्यम से उनको इतना सशक्त बनाना कि वे प्रगतिशील नागरिक की भांति देश के विकास में अपना योगदान दे सकें, यह मदन बाबू का जीवन उद्देश्य बन गया और इस निमित्त उन्होने पूरे बिहार में शिक्षा की जो पावन गंगा प्रवाहित की वह देखते हुए निश्चय ही उन्हें इस गंगा का भगीरथ कहना उचित होगा। इस देश से अनेक ऐसे महानुभाव हैं जिन पर लक्ष्मी की असीम कृपा है, लेकिन उनमें से बहुत कम ऐसे लोग होंगे जिनमें मदन बाबू जैसी विनम्रता और माटी पुत्र से अपना स्वाभाविक बंधुत्व का संबंध जोड़ने का गुण भी हो। जब वे दिल्ली आते थे तो सहज भाव से मुझसे मिलने पाञ्चजन्य कार्यालय कई बार आए। मैं उनसे कहता ही रहा कि आपने कष्ट क्यों किया, मुझे बुला लिया होता। पर वे बड़े स्नेह से यही कहते जो काम आप कर रहे हो, काफी महत्वपूर्ण है। मेरा क्या है मैं तो यूं ही आया हूँ। हमेशा एक ही विषय, एक ही धुन-वनवासी क्षेत्र में **एक अध्यापक एक विद्यालय** की अवधारणा को कैसे आगे बढ़ाना है, लोगों को कितना लाभ पहुँचा है और अभी कितना काम बाकी है। 70-75 वर्ष की आयु में भी मैंने जो बाल-सुलभ उत्साह और किसी नवीन कार्य को पूर्ण करने की ललक उनमें देखी वह आजकल युवाओं में भी कम ही दिखाई देती है। असाधारण व्यक्तित्व और कर्तृत्व जैसे शब्द उनके लिए प्रयुक्त होकर ही सार्थक लगते हैं। जनवरी

मदनलाल अग्रवालजी

1977 में उनके अमृत महोत्सव में भाग लेने का अवसर मुझे मिला था। स्वस्थ थे, प्रसन्न थे और अगले 20 वर्षों की योजनाएं उनकी अंगुलियों पर थीं। क्या-क्या कर लिया, क्या-क्या करना है और जो किया है उसमें क्या-क्या सुधार करना है।

बस हिन्दू समाज खड़ा हो जाए

उनसे पांच मिनट के लिए कभी मिलना हो तो ऐसा संभव ही नहीं था कि तीन मिनट वनवासियों के विकास, शिक्षा, उनके लिए देश भर में धन एकत्र करने की योजना इत्यादि का जिक्र न हो। एक बार अस्वस्थ दिखे। चलने में दिक्कत होती थी। फिर भी छूटते ही पूछा था,'भई एकल विद्यालयों के बारे मे पाञ्चजन्य में कुछ छापते रहा करो। अभी 'ज़ी' टीवी वालों से भी बात हुई है, उन्होंने भी एकल विद्यालयों के लिए धन संग्रह की योजना को जोर-शोर से प्रचारित करना मान लिया है। बस एक बार हिन्दू समाज खड़ा हो जाए फिर चाहे वेटिकन हो या वाशिंगटन किसी की साजिश सफल नहीं हो सकेगी।' कई बार मिलते तो दु:ख प्रकट करते **'अपने ही समाज के लोग, अपने ही पिछड़े हुए बन्धुओं के लिए जितना करना चाहिए उतना अब भी नहीं कर रहे हैं। मैं तो जहां भी जाता हूँ एक ही बात कहता हूँ, अगर वनवासी समाज के लिए कोई कुछ नहीं करता तो देश के लिए उसका सब कुछ किया हुआ भी अधूरा है।'** ❑

मातृहृदया मानसी राय सरकार

- चक्रधर सोरेन, पूर्व क्षेत्र सम्पर्क प्रमुख

मनुष्य जीवन की सार्थकता परोपकार में है। इसके बिना जीवन व्यर्थ है, पशुवत् है। परमार्थ परायण श्रीमती मानसी राय सरकार संघ प्रचारक मनमोहन राय की बहन हैं। खोड़ीबाड़ी के सम्पन्न जमींदार परिवार में आपका विवाह हुआ। 1985 में उनके मकान के दो कमरों में 5-7 वनवासी बालकों को लेकर खोड़ीबाड़ी छात्रावास प्रारंभ हुआ। छात्रावास के सभी छात्रों एवं कार्यकर्ताओं की माता के समान नि:स्वार्थ भाव से चिंता करती थी। प्रतिदिन उनके घर पर किसी न किसी कार्यकर्ता का भोजन होता था। वे कार्यकर्ताओं की आतुरता से प्रतीक्षा किया करती थी। जिस दिन कार्यकर्ता भोजन के लिए नहीं आते उस दिन उनकी आँखों से अश्रुधारा नि:सृत होने लगती। 1987 में उन्होंने स्वयं की 2 बीघा जमीन कल्याण आश्रम को छात्रावास निर्माण हेतु दी। 15

मानसी राय सरकार

अगस्त 1989 में छात्रावास का विधिवत् उद्घाटन हुआ। मानसी दी को पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता महानगर ने उनकी सेवाओं के लिए कलामन्दिर प्रेक्षागृह में सम्मानित किया। आपने खोड़ीबाड़ी प्रखंड की महिला समिति की अध्यक्षा के रूप में वर्षों तक अपनी सेवाएं दीं। महिलाओं को अगरबत्ती, पत्तल आदि हस्तशिल्प की चीजें बनाने के लिए प्रोत्साहित करती रहीं। सम्प्रति वृद्धावस्था के कारण शरीर जर्जर एवं अनेक बीमारियों से ग्रस्त है तथापि कार्यकर्ताओं के लिए उनके नेत्रों से स्नेहपूर्ण आशीर्वाद झरते रहते हैं। परमात्मा उन्हें शतायु करें। ❑

भक्तोराम : एक आदर्श कार्यकर्ता

पंकज भाटिया,
राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयाम प्रमुख, वनवासी कल्याण आश्रम, आगरा

भक्तोराम कोरबा जनजाति का था। वह अपने कल्याण आश्रम के सन्ना उपकेंद्र पर पूर्णकालिक चिकित्सा सहायक के रूप में कार्य करता था। उसकी पत्नी भी साथ में चिकित्सा का कार्य करती थी ।

जशपुरनगर स्थित वनवासी कल्याण आश्रम के छात्रावास में रह कर M.A. तक की पढ़ाई की फिर वनवासी कल्याण आश्रम के बगीचा उपकेंद्र पर चिकित्सा सहायक के रुप में कार्य करने लगा। बगीचा जशपुर से 100 किलोमीटर दूर है,घने जंगलों के बीच, जहां आज भी शेर व हाथी दीख जाते हैं । कुछ वर्ष वहां काम करने के बाद जब हम लोगों ने Village Health Worker Scheme शुरू की तो न जाने कितने गाँवों में जाकर ऐसे व्यक्ति ढूँढ़े जो सेवा कर सकें तथा गाँव में ही रह सकें।

भक्तोराम

ऐसे ही करीब 60 गाँवों में कोरबा प्रोजेक्ट के नाम से योजना अपने आश्रम द्वारा संचालित की गई जिसमें बरसात के दिनों में अपने कार्यकर्ताओं ने कई लोगों की उल्टी दस्त होने पर जान बचाई । इसी बीच भक्तो की अपनी महिला कार्यकर्ता मीना से शादी हो गई। विवाह के बाद वे लोग जशपुर से 54 किलोमीटर दूर सन्ना में अपने चिकित्सा उपकेंद्र पर रहने आ गए तथा अंतिम सांस तक वहीं रहे । 2004 के बाद जब मेरा केंद्र आगरा हो गया तो सबसे अधिक अगर किसी व्यक्ति के फोन आते थे तो वो भक्तो था। किसी न किसी मरीज को लेकर उसकी बातचीत होती थी।

उसे सरकारी नौकरी भी मिल रही थी पर यह कह कर उसने मना कर दी कि हम नहीं रहेंगे तो कौन रहेगा आश्रम में?

पैदल या साईकिल से वो किसी भी जरूरतमंद के घर उसकी सहायता करने पहुँच जाता था। सन्ना के आस पास के 40 गाँवों में सब उसे जानते थे। उसका गाँव कवई वहां से 16 किलोमीटर था। ऐसा निःस्पृह एवं सेवाभावी कार्यकर्ता मिलना मेरा सौभाग्य था पर उसको मधुमेह हो गया और पिछली बार जब जशपुर में मिला तो बहुत कमजोर हो गया था। अंततः उसे blood cancer हो गया। उसको चिकित्सा के लिए रायपुर भी भेजा गया पर वो नहीं बच सका। जब अगस्त 2017 में आयाम प्रमुखों के अभ्यास वर्ग में उसके गाँव गया तथा उसकी पत्नी मीना से मिला तो वह बोली- *'अब तो जीवन भर मैं ये सन्ना गाँव छोड़ कर नहीं जाऊँगी। भक्तोराम ने जो छोटा सा शिव मंदिर बनाया था उसकी सेवा करुँगी और उनका अधूरा काम पूरा करूँगी '*। नमन है ऐसे कार्यकर्ताओं को ! ❑

केरल की प्राकृतिक चिकित्सक

पद्मश्री लक्ष्मी कुट्टी अम्मा

आकाश अवस्थी
कार्यकर्ता, वनबंधु पत्रिका

भारत के अलग-अलग वनों में अनेक बेशकीमती जड़ी-बूटियाँ हैं। लक्ष्मी कुट्टी अम्मा की तरह वनौषधियों के क्षेत्र में श्रद्धा और आस्था सहित नवीन शोध की आवश्यकता है। वनौषधियों का व्यापक उपयोग और विपणन हो तो सबका मंगल है। एलोपैथी के अष्टपंजी शिकंजे से भारत को मुक्ति दिलाना समय की मांग है। (सं.)

केरल जिसे God's own country भी कहा जाता है, उसकी राजधनी त्रिवेन्द्रम से कुछ दूरी पर कल्लार की पहाड़ियाँ हैं, जिसमें कानिकर जनजाति निवास करती है। केरल में इस जनजाति की संख्या 20,000 के आसपास है। साक्षरता के मामले में यह जनजाति अब बहुत आगे है। 2001 की जनगणना के अनुसार इस जनजाति के लगभग 85 प्रतिशत लोग शिक्षित थे। सन 1943 में इसी कानिकर जनजाति में लक्ष्मी कुटटी अम्मा का जन्म हुआ। उनके पिता का नाम चथडी कानी और माँ का नाम कुंजू था। 6 साल की अवस्था में ही पिता का देहांत हो गया। उनकी माँ एक पारंपरिक प्राकृतिक चिकित्सक थी। अम्मा को उन्हीं से जड़ी बूटी का ज्ञान प्राप्त हुआ। वे 1950 के दशक में पढ़ने वाली इकलौती महिला थी। लगभग 10 कि.मी. रोज़ चलकर पढ़ने जाती थी। हालांकि उनकी शिक्षा केवल आठवीं तक हुई है। वे कहती हैं कि कितनी भी बाधाएँ आयें परन्तु स्कूल अवश्य जाना चाहिए। स्कूल के समय साथ जाने वाले माथन कानी के साथ ही अम्मा का विवाह हुआ। अम्मा के तीन पुत्र हुए जिनमें दो की मृत्यु हो चुकी है। पहले बेटे की मौत पागल हाथी के द्वारा हुई। अम्मा कहती हैं कि उसको बचाया जा सकता था, अगर उसके घर की तरफ सड़क बनी होती। यह सड़क 1952 में स्वीकृत हुई लेकिन निर्माण कार्य 2017 में पूरा हुआ। वनवासी समाज के लिए सरकारी तंत्र की यह एक तरह से उदासीनता ही है कि 60 साल के बाद किसी सड़क को बनाया जाता है। उनके दूसरे बेटे की मृत्यु दिल का दौरा पड़ने से हुई और तीसरा बेटा आज रेलवे में टिकट निरीक्षक है। वह कहती हैं कि मैं अपने बेटे के साथ शहर में भी रह सकती थी परन्तु जंगल में ही रहना चाहती हूँ और *मुझे विश्वास है कि जब तक हम जंगल को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे, प्रकृति के नियमों का ध्यान रखेंगे तब तक जंगल भी हमें हानि नहीं पहुंचाएगा।* लक्ष्मी कुट्टी अम्मा प्रसिद्ध विष चिकित्सक (प्राकृतिक चिकित्सक) कवि व शिक्षिका भी हैं। अम्मा केरल के लोक साहित्य अकादमी

में शिक्षिका के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने लगभग 500 हर्बल दवाईयाँ तैयार की हैं जिससे सर्पदंश या अन्य रोगों का इलाज किया जा सके। अम्मा और उनकी माँ ने कहीं भी इन पौधों और दवाइयों का लिखित अभिलेख (Documentation) नहीं रखा है, लेकिन केरल के वन विभाग ने इनको अम्मा की मदद से इनके उपयोग को एक किताब के रूप में दर्ज करने का फैसला किया है। लक्ष्मी कुट्टी अम्मा ने वनवासी संस्कृति पर बहुत सारे लेख भी लिखे हैं जो DC बुक्स में प्रकाशित भी हुए हैं। 75 वर्ष की उम्र में भी वह जड़ी बूटी एकत्रित करने के लिए जंगल जाती हैं। अम्मा के पास कोई निश्चित आंकड़ा नहीं है फिर भी वह बताती हैं कि उन्होंने अपनी दवाइयाँ देकर लगभग 700 लोगों का इलाज किया है जिनमें से करीब 350 लोग केवल सर्पदंश के ही शिकार थे जिनको बचाया गया। वह कहती हैं कि पिछले 46 वर्षों से मैं सर्पदंश का पारंपरिक इलाज कर रही हूँ लेकिन जब तक हम अपने आस-पास की प्रकृति के साथ सामंजस्य नहीं बिठाएंगे तब तक ऐसी समस्या आती रहेंगी और यह व्यवस्था पर्यावरण को नुकसान ही पहुँचाएगी। बहुत से लोग उन्हें प्यार से **वनमुतजी** बुलाते हैं; जिसका मलयालम में अर्थ है-**जंगल की बड़ी माँ**। वे कहती हैं कि मैं गाँव से लेकर नगरों तक बहुत से लोगों से मिली हूँ, जंगल से बाहर कई क्षेत्रों की यात्रा की है, फिर भी जंगल ही मेरा घर है और यही मेरी धरोहर है। उन्होंने दक्षिण भारत की कई संस्थाओं में प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में भाषण दिये हैं। वे कहती हैं कि **'बाहर की दुनिया ने मुझे कई सम्मान दिए, पुरस्कार दिए, किताबें प्रकाशित की। लेकिन मैं यहीं रहना चाहती हूँ। जंगल में रहने के लिए हिम्मत चाहिए'।**

यहां उसने उत्सुकता से उसके चारों ओर प्रकृति को देखा और प्रत्येक पौधे के औषधीय मूल्य का अध्ययन किया। उसका आंगन विभिन्न औषधीय पौधों से भरा है। उनके परिवार में एक शिव मंदिर भी है जिसे 'किरथा मोर्तप' कहा जाता है।
'किरता मुरती' के रूप में 'भगवान शिव' कई पीढ़ियों के लिए पारिवारिक देवता बने रहे हैं। वह हैं जो अपनी मां के निधन के बाद नियमित पूजा करती हैं। उनका मानना है कि भगवान शिव वैद्यनाथ अल्टिमेट हीलर हैं और उनके इलाज की सफलता के पीछे हैं।

जब मैंने उनसे पूछा कि संघ से कैसे जुड़ना हुआ? तो वह बताती हैं कि संघ का कार्य सेवाभारती के माध्यम से उनके यहाँ पंहुचा। वहाँ गिरिजन सेवा सोसायटी के महिला कार्य की अध्यक्षा के रूप में अम्मा ने 16 वर्ष कार्य किया।

सन 1993 में अ.भा.वनवासी कल्याण आश्रम के तत्कालीन संगठन मंत्री भास्कर राव कलंबी ने वनवासी लोगों की एक बड़ी सभा की उसमें भी अम्मा ने महिला प्रतिनिधि के नाते भाग लिया था। उनको सन् 1995 में केरल सरकार द्वारा **नट्टू वैद्यरत्नम्** नामक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 2018 में अम्मा को भारत के चौथे शीर्ष पुरस्कार **पद्मश्री** से सम्मानित किया गया। जनवरी 2018 में प्रधानमंत्री ने अपने लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' में लक्ष्मी कुटटी अम्मा की प्रशंसा करते हुए कहा कि आप सभी केरल की आदिवासी महिला

लक्ष्मीकुट्टी की कहानी सुनकर सुखद आश्चर्य से भर जायेंगे। लक्ष्मीकुट्टी, केल्लार में शिक्षिका हैं और अब भी घने जंगलों के बीच आदिवासी इलाके में ताड़ के पत्तों से बनी झोपड़ी में रहती हैं। उन्होंने अपनी स्मृति के आधार पर ही 500 Herbal medicines जड़ी-बूटियों से बनाई हैं।

सांप काटने के बाद उपयोग की जाने वाली दवाई बनाने में उन्हें महारत हासिल है। लक्ष्मी जी herbal दवाओं की अपनी जानकारी से लगातार समाज की सेवा कर रही हैं। अम्मा के घर के दो रैक, उनको मिले पुरस्कारों और प्रशस्ति पत्रों से भरी हुई हैं। अब उनके पास इस विद्या को पाने कई लोग आते हैं जो उनके पास रहकर इन दवाईयों का अध्ययन करते हैं। उनका सपना है कि उनकी झोंपड़ी एक छोटे अस्पताल में परिणत हो जाये जिससे वहां इलाज के लिए आने वाले लोग वहाँ रुककर अपना उपचार करा सकें। पद्मश्री मिलने के बाद कुछ लोग उनके पास आये और उनके नाम पर इंस्टीच्यूट खोलने की बात की। वह बताती है कि पिछले दिनों उनको लन्दन, सऊदी अरब और यू.ए.ई. से निमंत्रण आ चुके हैं।

वनवासी कल्याण आश्रम का अखिल भारतीय कार्यकर्ता सम्मेलन इस वर्ष महाराष्ट्र के शिरडी में आयोजित हुआ था। मंच पर मुख्य अतिथि और अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ लक्ष्मी कुट्टी अम्मा भी विराजमान थीं। एक कार्यकर्ता की तरह वो पूरे तीन दिन सम्मेलन में रही। कल्याण आश्रम की उपाध्यक्षा श्रीमती निलीमाताई पट्टे ने उनको सम्मानित भी किया। अंतिम दिन उन्होंने मलयालम में अपना मनोगत व्यक्त किया। उनके भाषण में वनवासी स्वभाव की सहजता झलक रही थी। उन्होंने अपने सुरीले कंठ से स्वरचित एक गीत भी गाया। केरल के कार्यकर्ता ने उनके प्रवचन की सारी बातें हिन्दी में अनुवादित कर सबको कही। सभी के लिये यह एक अनोखा अनुभव था।

आज लक्ष्मी कुटटी अम्मा वनवासी समाज के लिए गर्व का प्रतीक हैं। वह बिना किसी भेदभाव के वनवासी ग्रामवासी व नगरवासी की अपने समुदाय के बुजुर्गों से प्राप्त ज्ञान के साथ सेवा कर रही हैं। उनके अंदर इतना प्रेम और ममत्व भाव है कि वह अपनी दवाईयों के साथ शारीरिक और मानसिक घावों को भी ठीक कर सकती हैं। वह अपने घर पर आपको आमंत्रित करते हुए अपनी लोककथाएँ सुनाती हैं तथा कविता गाती हैं जो आपका मन मोह लेती हैं। ❑

दीप निष्ठा का जले

- पुष्पा झुनझुनवाला
अध्यक्षा, अलीपुर महिला समिति

कल्याण आश्रम की महिला समितियों द्वारा इस वर्ष 25,000 दीपकों पर कलात्मक चित्रकारी कर वनवासी सेवा का संदेश घर-घर पहुँचाया गया। दीपकों पर चित्रकारी करते समय मन में सहज ही चिंतन उभरा कि दीपक अकेला प्रज्ज्वलित नहीं हो सकता, साथ में चाहिए रूई की बाती, घी और प्रज्ज्वलित करने के लिए दियासलाई। चारों का योग होने पर ही दीपक प्रज्ज्वलित होता है। दीपक है-कल्याण आश्रम का कार्य, रूई है- कार्यकर्ताओं की एकता, घी है-आपसी प्यार तथा दियासलाई है-कर्म, लगन और धैर्य। बहनों ! हम सब मिलकर दीप जलाएं, जहाँ अभी भी अंधेरा है। अपने मन-मन्दिर में भी दीप जलाएं। मन में रोशनी रहेगी तो पूरा देश रोशन हो जाएगा।

डॉ. राजेन्द्र वासुदेवराव उर्फ बालासाहेब पट्टलवार

श्रीमती वैशाली देशपांडे

कुछ व्यक्तियों को ईश्वर विशेष प्रयोजन से इस धराधाम पर भेजते हैं। ऐसे व्यक्ति दीपस्तंभ की तरह स्व-पर का जीवन प्रकाशित करते हैं। महानुभावों की इस श्रृंखला में स्व. डॉ. राजेन्द्र वासुदेवराव उर्फ बालासाहेब पट्टलवार का नाम सदैव श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जायेगा। आपका जन्म मध्यप्रदेश के मंडला तहसील के वडली गांव में 29 मई 1933 में हुआ। आपके पिता जी सरकारी डॉक्टर थे। कालक्रम में वे परतवाड़ा गाँव में रहने के लिए आ गए। 1956 में बालासाहब एम.बी.बी.एस. की डिग्री प्राप्त कर चुके थे। **परतवाड़ा में ही रहकर उन्होंने अपना अस्पताल खोलते समय यह तय किया था कि रुग्णों की मन से सेवा करूंगा, पैसे के लिए यह काम नहीं करूंगा।**

उनके अस्पताल में अधिकतर गरीब मरीज आते थे। बालासाहब के चेहरे पर हमेशा प्रसन्नता एवं शांति का भाव रहता था। मरीज उनके अस्पताल से ठीक होकर लौटे, यही उनकी इच्छा रहती थी।

विदर्भ वनवासी कल्याण आश्रम का कार्य उन्होंने 1980 में आरंभ किया। परतवाड़ा से मेलघाट का वनवासी क्षेत्र नजदीक है। वहाँ अधिकतर कोरकू जनजाति के लोग रहते हैं। सप्ताह में पांच दिन अंदर के वनवासी क्षेत्र में कल्याण आश्रम अपना मेडिकल सेंटर चलाता है। काटकुंभ, धारणी, कुलंगणा, कालापानी ऐसे गांवों में सातत्य से बालासाहब जी जाते थे। आसपास के गाँव के अनेक मरीज उनके पास आते थे।

परतवाड़ा के निवृत्त शिक्षक, डॉक्टर, सामाजिक कार्यकर्ता बालासाहब कल्याण आश्रम की मोबाइल वैन से वनवासी ग्रामों में जाकर मरीजों को दवाई देने के अलावा अनेक अच्छी बातें बताते थे।

1989 में संघ का अचलपुर स्वतंत्र जिला बना, 1990 से बालासाहब जी प्रथम जिला संघचालक बने, लगभग 2008 तक उन्होंने संघ और कल्याण आश्रम का निष्ठा से दायित्व निभाया।

बालासाहब के दो बेटे तथा दो बेटियाँ हैं। एक सुपुत्र कोल्हापुर में इंजीनियर है और दूसरा नागपुर में डॉक्टर है। धर्मपत्नी श्रीमती प्रभाताई राष्ट्र सेविका समिति की सेविका थी। संघ के कोई भी अधिकारी आते तो प्रथम उनके घर जाते थे। सभी के साथ वे दोनो भी बहुत ही सहजता से और सरलता से बात करते थे। उनके घर में सभी का प्रेम से स्वागत तथा

आतिथ्य होता था। उनके घर में एक बिल्ली थी, अस्पताल से घर आने में डॉक्टर जी को अगर देर हो गई तो बिल्ली अस्पताल में उनके कुर्सी पर जा कर बैठ जाती थी, क्योंकि प्रभाताई डॉक्टर साहब के लिए भोजन के लिए राह देखती थी। बिल्ली एक प्रकार से संदेशवाहक का काम करती थी। जैसे ही वे घर आते, कुर्सी पर बैठते, बिल्ली उनकी गोद में बैठ जाती।

हम जब उनके साथ कल्याण आश्रम की गाड़ी में जाते थे तो खुद आँखों से कुछ बातें देखी, समझी और अनुभव की। डॉक्टर को दवाई और इंजेक्शन के अलावा अपने पास और भी कुछ रखना पड़ता है, जिससे मरीजों को आराम मिले और वह है प्रेम, अपनत्व की भावना जो बालासाहब हमेशा अपने पास रखते थे। मरीजों की पीठ पर अपना ममत्व भरा हाथ रखते थे, बीमार व्यक्ति अपना दु:ख दर्द भूलकर अपनी अन्य परेशानियाँ, समस्या उन्हें बताते थे। सब लोग उन्हे प्यार से बाबा कहते थे। इसलिए मेलघाट के क्षेत्र में उनकी पहचान वनवासी बाबा के रूप में थी। जिस दिन मेडिकल सेंटर रहता था, उस दिन काटकुंभ, धारणी, मलकापुर अन्य आसपास के गाँव के लोग पैदल चलकर एक घंटा पहले ही वनवासी बाबा को मिलने हेतु पहुँच जाते थे। मेलघाट के कोरकु, भील तथा अन्य जनजाति के हजारों लोंगों को उन्होंने दवाई दी है। दवाई लेना, बीमारी बताना इससे भी अधिक लोग उनसे मिलना पसंद करते थे। उनसे मिलकर मरीजों को आत्मिक संतोष एवं आश्वस्ति की अनुभूति होती थी। एक समय का प्रसंग है, डॉक्टर जी के साथ कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता श्री दिनकर जी का प्रवास था। दिनकर जी उसी गाँव में रुके हुए थे। वहाँ एक महिला कैंसर से पीड़ित थी। हर सप्ताह वह मेडिकल सेंटर में आकर डॉक्टर जी से औषधि लाती थी। लेकिन उस दिन वह महिला नहीं आ पाई। दिनकर जी ने डॉक्टर जी को बताया कि उसका घर बहुत दूर है, आपके द्वारा लाई हुई दवाई मैं उसके पास पहुँचा दूँगा। डॉक्टर बोले 'वह आज नहीं आयी, आज मैं खुद उसके घर जाकर उसे दवाई देता हूँ।' ऐसे बोलते बोलते डॉक्टर उस कैंसर पीड़िता के घर की ओर निकल पड़े उसके घर पहुँच गए। उस महिला का दर्द असहनीय था। उसका घूमना फिरना बंद हो गया था। जैसे ही उसे पता चला डॉक्टर बाबा आ गए हैं, उसका चेहरा खिल उठा। डॉक्टर जी ने कार्यकर्ता को बताया इस महिला को कैन्सर हुआ है, ये ज्यादा दिन जीवित नहीं रह सकती। मैं खुद सप्ताह में एक बार आकर इसे दर्द निवारक इंजेक्शन देता हूँ ताकि उसे सहजता से एवं वेदना रहित मृत्यु आए। एक सामान्य बीमार कोरकू महिला से इतनी बड़ी सोच रख कर एक प्रतिष्ठित डॉक्टर मिलने के लिए उसकी झोपड़ी तक जाता है। मुझे लगता है, संघ का सच्चा स्वयंसेवक ही यह कर सकता है और **कल्याण आश्रम का यही काम है-वनवासी समाज को अपना मानना, उसे आत्मीयता से देखना।** कवि की ये पंक्तियाँ उनके जीवन पर चरितार्थ होती हैं-

हारे-थके मुसाफिर के चरणों को धोकर पी लेने से,
अक्सर मैंने देखा है, मेरी थकन उतर जाती है।
संकटग्रस्त किसी नाविक को निज पतवार थमा देने से,
अक्सर मैंने देखा है, मेरी नैया तिर जाती है।

डॉ. बालासाहब पट्टलवार जी का नागपुर में अपने बेटे के यहाँ दु:खद निधन हुआ। उनकी पावन स्मृति को शत शत नमन। ❑

कार्यकर्ताओं के प्रेरणास्रोत : शंकरलाल अग्रवाल

संदीप चौधरी
संगठन मंत्री, पू.क.आश्रम, कोलकाता महानगर

श्री शंकरलाल जी अग्रवाल का जन्म राजस्थान के जयपुर जिले के सांभर लेक शहर में 14 जनवरी 1955 में हुआ। पिता स्वर्गीय रामदीन गुप्ता एवं माता श्रीमती पुष्पा देवी के विचारों एवं कार्यों का आपके जीवन पर गहरा प्रभाव है। 1974 में कोलकाता के सेंट जेवियर कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। युवावस्था से ही व्यवसाय के साथ-साथ समाज सेवा के कार्यों में आपकी गहरी अभिरुचि थी। सन् 1990 में आपका सम्पर्क कोलकाता के सेवाभावी सांस्कृतिक संगठन **पूर्वांचल कल्याण आश्रम** से आया तो अल्प समय में ही कार्य के साथ स्वयं को समरस कर लिया। संस्था के विभिन्न दायित्वों - मंत्री, संगठन मंत्री, संभाग प्रमुख- आदि का कुशलतापूर्वक निर्वाह किया एवं सम्प्रति आप पर **अखिल भारतीय नगरीय प्रमुख** का गुरुत्तर दायित्व है।

शंकरलाल अग्रवाल

कल्याण आश्रम के महानगरीय संगठन ने विगत वर्षों में जो ऊंचाइयाँ ली हैं, नए-नए स्वतंत्र कार्यक्रमों को सफल बनाया है एवं कार्य की नई-नई चुनौतियों को स्वीकार करने का जो साहस प्राप्त किया है उसके पीछे शंकरजी का संगठन कौशल, श्रम और सूझ-बूझ है। समाज के एक-एक व्यक्ति के मन में वनवासी समाज के प्रति अपने दायित्व का बोध जगाकर सम्पूर्ण समाज के समरसता प्राप्त करने हेतु अहर्निश कार्यरत रहते हैं। आपके कुशल नेतृत्व में पूर्वांचल कल्याण आश्रम की विभिन्न सेवामूलक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों ने कोलकाता में ही नहीं सम्पूर्ण देश में सुयश अर्जित किया है, अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। वनवासी समाज के बारे में गहरी समझ है आपकी। व्यवहार में जितने सहज, सरल हैं विचार और वक्तृत्व में उतने ही धारदार और पैने हैं शंकरलाल जी। आप वनवासी कल्याण आश्रम के विषय को इतने प्रभावी एवं सटीक रूप से प्रस्तुत करते हैं कि आपकी बात सीधे श्रोताओं के हृदय को स्पर्श कर लेती है। सभी साथी कार्यकर्ताओं के प्रति मन में अपार आत्मीय भाव रखते हैं। सभी के सुख-दु:ख में पूरे मन से सहभागी बनते हैं। आपकी बहुमुखी प्रतिभा एवं संगठन क्षमता के लिए मई 2000 में **कोलकाता विद्युत व्यवसायी समिति** एवं 2007 में कोलकाता की सुप्रसिद्ध साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था **श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय** ने सम्मानित किया था एवं कोलकाता की सुप्रसिद्ध संस्था विचार मंच ने 16 दिसम्बर 2018 आपको **ग्राम्यसेवा सम्मान** से समादृत किया है। यह सम्मान कोलकाता के महामहिम राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी के कर-कमलों से दिया गया। एक सामान्य कार्यकर्ता से अखिल भारतीय स्तर पर देश के 11 करोड़ वनवासियों की चिन्ता और चिन्तन में लगे शंकरजी का प्रसिद्धि पराङ्मुख आदर्श चरित्र अनुकरणीय है। ❑

भाषा की रक्षा भी पहचान की रक्षा

अतुल जोग
संगठन मंत्री, अ.भा. वनवासी कल्याण आश्रम

मेघालय के गारो पहाड़ क्षेत्र में केन्द्र तुरा नाम का शहर है। वहाँ से लगभग 40 कि.मी. दूरी पर गारोबाधा नाम का एक छोटा सा गांव है। तुरा से बस में बैठकर मैं और सहदेव हाजोंग गारोबाधा पहुँचे। बाजार में बस से उतर कर सहदेव दा एक छोटी सी दुकान में ले गए। दुकान में एक सामान्य से दीखने वाले व्यक्ति ने हँसते हुए हमारा स्वागत किया। परिचय होने के बाद पता चला कि उनका नाम **अर्णब हाजोंग** है। अर्णब दा बांग्ला भाषा में बोल रहे थे। दुकान स्टेशनरी की थी। आने वाले ग्राहकों में अधिकांशत: स्कूली छात्र ही थे। अर्णब दा अपना काम करते-करते बात कर रहे थे। टेबल पर एक पत्रिका रखी थी, नाम था **'राव'**। खोलकर देखा तो पता चला कि वह पत्रिका हाजोंग भाषा में थी एवं उसके संपादक स्वयं अर्णब दा ही थे। अर्णब दा कल्याण आश्रम के जिला अध्यक्ष थे । मुझसे रहा नहीं गया और मैंने पत्रिका के बारे में पूछा तो पता चला यह पत्रिका 1997 से अर्णब दा चला रहे हैं। **यह कोई व्यवसायिक पत्रिका नहीं है अपितु अपनी भाषा के उत्थान हेतु उन्होंने यह मुहिम शुरू की है।** तब तक चाय मंगाई गई। फिर चाय की चुस्की लेते-लेते गपशप आरम्भ हो गई। होजोंग जनजाति के लोग मेघालय के गारो पहाड़ के क्षेत्र एवं असम में रहते हैं। एक लाख से अधिक जनसंख्या वाली इस जनजाति की अपनी अलग भाषा है। लेकिन इस समाज के इर्द गिर्द बंगाली, असमिया समाज रहने के कारण हाजोंग समाज के लोग भी इन्ही दो भाषाओं का ही प्रयोग करते हैं। इस कारण हाजोंग भाषा; बोली भाषा तक ही सीमित रह गई थी। अर्णब दा ने सोचा आने वाली पीढ़ी को हाजोंग भाषा आनी चाहिए एवं जब तक उस भाषा में साहित्य निर्माण नहीं होगा तब तक उसका विकास भी नहीं होगा इसी उद्देश्य से 'राव' पत्रिका आरम्भ की गई एवं 22 दिसम्बर 1999 में हाजोंग भाषा विकास परिषद का गठन भी किया गया। इसके द्वारा विभिन्न साहित्यिक उपक्रम भी आरम्भ हुए। धीरे-धीरे परिषद का हाजोंग समाज में नाम होने लगा। इस भाषा को लिखने के लिए असमिया लिपि के साथ कुछ नए अक्षरों का सृजन किया गया। इस का उपयोग करते हुए साहित्य निर्मिति होने लगी।

अर्णब हाजोंग

इन क्रियाकलापों को अवरुद्ध करने के लिए कुछ अंग्रेजी माध्यम में पढ़े लिखे युवाओं ने विधर्मियों के उकसावे के कारण हाजोंग भाषा की लिपि को बदलकर रोमन लिपि में (अंग्रेजी) लिखने का आग्रह करने लगे। उसे हाजोंग भाषा विकास परिषद मान्यता दे, ऐसी मांग करने लगे। लेकिन अर्णब दा इस खतरे से वाकिफ थे। उन्होंने लोगों को बताया कि रोमन

लिपि की सीमाएं क्या हैं? वह हाजोंग एवं अन्य भारतीय भाषा लिखने के लिए अक्षम हैं। उनको यह भी मालूम था कि उत्तर पूर्वांचल में अनेक जनजाति भाषाओं की लिपि बदलकर रोमन कर दी गई है इस कारण उनका विकास नहीं हो पा रहा है, इतना ही नहीं वे भाषाएं समाप्ति के कगार पर हैं। रोमन लिपि हाजोंग भाषा को समाप्त करने का षड्यंत्र है, इस बात की चर्चा समाज में एवं हाजोंग भाषा विकास परिषद के लोगों के साथ की गई। लिपि बदलाव को समर्थन नहीं मिल रहा है, यह देख विरोधियों ने डराना धमकाना आरम्भ किया। इसका चरम बिन्दु तब पहुँचा जब 11 दिसम्बर 2005 को प्रात: 5.30 अर्णब दा जब घर से दुकान की ओर जा रहे थे उस समय रास्ते में अंधेरे का लाभ उठाकर आठ लोगों ने उन पर हमला कर दिया। लाठियाँ उन पर बरसने लगी। अर्णब दा घायल हो गए। आक्रमणकारी भाग गए। लेकिन भगवान की कृपा से अर्णब दा बच गए। कुछ दिनों के लिए स्वास्थ्य लाभ के लिए गुवाहाटी रहे। फिर स्वस्थ होकर कार्य में जुट गए । बाद में उन्होंने भगवद्गीता का हाजोंग भाषा में अनुवाद किया। छात्रों के लिए प्रारंभिक कक्षाओं का पाठ्यक्रम बनाने का भी कार्य चल रहा है। हाजोंग भाषा परिषद् का वार्षिक सम्मलेन हर वर्ष होता है।

असम में बोडो एक बड़ी एवं प्रमुख जनजाति है। बोडो भाषा एक समृद्ध भाषा है। बोडो भाषा परिषद् एक मान्यता प्राप्त और प्रतिष्ठित संस्था है। बोडो भाषा में महाविद्यालयीन एवं उच्च शिक्षा की सुविधा उपलब्ध है बोडो भाषा में विभिन्न प्रकार का साहित्य सृजन हुआ है। भारत सरकार ने 22 अनुसूचित भाषाओं को विशेष संवैधानिक स्थान दिया है उसमे बोडो भाषा को भी अनुसूचि में सम्मान का स्थान प्राप्त है। बोडो समाज ने अपनी भाषा के लिए 1963 से देवनागरी लिपि को स्वीकार किया है। बोडो समाज में भी एक विचार के लोगों ने बोडो भाषा की लिपि बदलकर रोमन लिपि करने का दुराग्रह बोडो साहित्य सभा के सामने किया था लेकिन बोडो साहित्य सभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री बिनेश्वर ब्रह्म के नेतृत्व में इस लिपि परिवर्तन की बात को अस्वीकार करते हुए बोडो भाषा के लिए देवनागरी लिपि का ही समर्थन किया एवं रोमन लिपि को अस्वीकार किया। लिपि परिवर्तन करना बाह्य दृष्टि से साधारण बात लगती है। लेकिन यह रोमन लिपि तो कोई भारतीय लिपि नहीं है, भारतीय भाषाओं को लिखने में असमर्थ है। कई बार यह मांग करने वालों के पीछे अलगाववादी तत्वों का भी हाथ रहा है। लेकिन **बोडो साहित्य सभा ने देवनागरी भाषा को बरकरार रखते हुए यह भी सन्देश दिया कि हम भारत के हैं और भारत के ही रहेंगे।** अलगाववादी तत्वों के लिए यह निर्णय असहनीय था इसलिए उन्होंने हिंसा का सहारा लिया। 19 अगस्त 2000 की रात को चार आतंकी श्री बिनेश्वर ब्रह्म जी के घर में घुस गए और 19 गोलियाँ उनके शरीर पर उतार दी । सभी लोग स्तब्ध रह गए। सारे समाज ने आतंकियों को एक स्वर में धिक्कारा। अपनी भाषा की रक्षा के लिए श्री बिनेश्वर ब्रह्म जी ने हौतात्म्य स्वीकारा। उनके इस बलिदान के कारण आज बोडो भाषा फल-फूल रही है। धन्य है वो समाज, धन्य है वो लोग जो अपनी भाषा एवं संस्कृति की रक्षा हेतु जीते हैं, बलिदान करते हैं। ऐसे समाज और व्यक्तियों को शत शत नमन। ❑

कर्मयोगी श्री रामचंद्र खराड़ी

सुरेश चौधरी
वरिष्ठ साहित्यकार

15 जनवरी 1955 को उदयपुर जिले के खरबर ग्राम में आपका जन्म हुआ। आपके पिता का नाम श्री गंगा राम खराड़ी तथा माता का नाम श्रीमती लाली बाई खराड़ी है। 12 अगस्त 1987 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में नियुक्त हुए।

सम्मान एवं पुरस्कार:

- भारत विकास परिषद् द्वारा 1995 एवं 1996 में दो वर्षों तक सरकारी योजना को सफलता पूर्वक कार्यान्वित करने हेतु भारत निर्माण सम्मान।
- जन सूचना अभियान एवं पात्र सूचना कार्यालय द्वारा प्रशस्ति पत्र
- महावीर चेरिटेबल ट्रस्ट, समता ट्रस्ट द्वारा दिव्यांग लोगों की सेवा हेतु सम्मानित।
- गायत्री परिवार, राज्य चुनाव आयोग, लायंस क्लब द्वारा सम्मानित
- अमृता देवी अवार्ड से सम्मानित।

रामचंद्र खराड़ी

अतिरिक्त सेवा भाव:

वनवासी क्षेत्र जो अशिक्षा, गरीबी और सामाजिक विषमताओं से घिरा है, ऐसे में वहां सुधार कार्य करना बहुत दुरुह होता है। उन्हें उनकी बोली में उनकी समझ अनुसार ही समझाना पड़ता है। वनवासी बंधु अत्यंत सरल होते हैं, बिल्कुल कच्चे घड़े की तरह। उन्हें उनकी भाषा में संपर्क कर सुघड़ कुम्हार अनुपम कृति में परिवर्तित कर सकता है, यह काम रामचंद्र जी ने बखूबी कर दिखाया। बचपन से ही एक आग इनके ह्रदय में प्रदीप्त थी, कैसे बेसहारा एवं असहाय लोगों की सेवा की जाय। वनवासी कल्याण परिषद् के द्वारा इन्हें यह मौका मिला। 1995 से ये विभिन्न शैक्षिक, समाज सुधार तथा नशा मुक्ति कार्यक्रमों में संलग्न हैं। सामूहिक विवाह, सामाजिक कुरीतियों को दूर करना, वृक्षारोपण,भारतीय संस्कृति के सोलह संस्कारों का महत्व बताना, औषधि वितरण, आर्थिक विकास, वनवासियों की धार्मिक आस्था का संरक्षण आदि इनके कार्य क्षेत्र रहे। इस कार्य का फल यह रहा कि आज उदयपुर के जनजातीय क्षेत्र के सैकड़ों युवा बिना मानसिक तनाव के विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलतापूर्वक उत्तीर्ण हो राज्य सरकार की रोजगार गारंटी योजना का लाभ उठा रहे हैं। आज उन क्षेत्रों में परिवर्तन स्पष्ट परिलक्षित हैं। नशा एवं अंधविश्वास से दूर आज वनवासी सामाजिक जिम्मेदारी निभाते दीख रहे हैं। बाल विवाह और दहेज जैसी कुरीतियाँ समाप्ति की ओर हैं। आँख के ऑपरेशन की सुविधा उपलब्ध करा इन्होंने कईयों को दुनिया देखने का अवसर दिया। इन सब कार्यों को कार्यान्वित करने हेतु उन्होंने अति-प्रतिष्ठित नौकरी से भी समय पूर्व स्वैच्छिक अवकाश ले लिया। धन्य हैं ऐसे कर्मयोगी, समाज सेवी! नमन!! ❑

वनवासियों के बीच कार्य कर आत्मतोष का अनुभव

कल्पना भट्टाचार्य

श्रीमती कल्पना भट्टाचार्य का यह अनुभव कथन प्रमाण है कि वनवासी सेवा से कार्यकर्ता का मन स्वत: निर्मल होता है; सेवाकार्य का यह दिव्य आध्यात्मिक प्रतिफल है। सं.

मैंने 2005 में पूर्वांचल कल्याण आश्रम के सम्मेलन में भाग लिया। मुझे लगा कि वनवासी सेवा कार्य मेरी प्रकृति के अनुरूप है। इसके बाद कल्याण आश्रम के साथ सम्पर्क गहराता गया। वनवासियों के बीच काम करना अर्थात् सरल जगत के साथ परिचय एवं आत्मतोष का अनुभव। कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं के मन की सेवावृत्ति, समर्पण भाव एवं आचार-विचार देखकर मन में ऊर्जा का संचार होता है। धीरे-धीरे व्यवहारिक रूप से काम करने का निश्चय किया। बालासाहब देशपांडे जी की जीवनी पढ़कर मेरे निश्चय को बल मिला। मैंने हुगली जिला के पोल्बा थाना को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। वहां मैंने अपनी बहनों के साथ 11 शिशु शिक्षा केन्द्र प्रारंभ किए। आस-पास के 35 गांवों से सघन संपर्क किया। हूल दिवस, बिरसा मुण्डा दिवस, रक्षा बंधन आदि कार्यक्रम हम सब गाँवों में जाकर मनाते हैं। वनवासियों में जागरण एवं प्रगति की उम्मीद अंगड़ाई ले रही है। विश्वास है कि हम इस पवित्र कार्य को पूरे जिले में विस्तारित कर पायेंगी। ❑

अध्यात्मिक जागरण के पुरोधा :

श्री श्री श्यामानंद ब्रह्मचारी जी महराज

श्री श्री श्यामानंद ब्रह्मचारी जी महराज ने मेघालय के गारो हिल्स के कोच एवं हाजोंग क्षेत्र के वनवासियों में सामाजिक व अध्यात्मिक चेतना को जागृत कर उस क्षेत्र में ईसाईयों द्वारा व्यापक पैमाने पर किए जा रहे धर्मान्तरण पर अंकुश लगाया। उनके द्वारा आयोजित जागरूकता कार्यक्रमों ने राष्ट्रवादी संगठनों के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। वे सदैव राष्ट्रीय भावना से जुड़े संगठनों के साथ निर्भीक रूप से खड़े रहे।

श्री श्यामानंद ब्रह्मचारी

उपलब्धियाँ

उनके अथक श्रम से गारो हिल्स के अति पिछड़े सुदूर क्षेत्र में सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार हुआ। उन्होंने जनजातियों के बीच शिक्षा और चिकित्सा की मूलभूत सुविधाओं को उपलब्ध करवाया। अब तक जो क्षेत्र ईसाई वर्चस्व से ग्रस्त था, अब हिन्दू संस्थानों द्वारा उपलब्ध कराए गए विद्यालयों एवं ग्रामीण स्तर की चिकित्सकीय सुविधाओं से युक्त है। यह सब इनके ही परिश्रम का फल है। Loss of Culture Loss of Identity के सूत्र को इन्होंने गहराई से आत्मसात् किया जिसके फलस्वरुप वे जनजाति समाज में स्वधर्म एवं संस्कृति की अलख जगा सके। इनके कार्य का फल मिलना प्रारंभ हो गया है। आज इस कोच और हाजोंग क्षेत्र में धर्म परिवर्तन की दर शून्य है। ❑

राघव राणा : अद्‌भुत संगठन शिल्पी

कृपा प्रसाद सिंह
उपाध्यक्ष, अ.भा.व.कल्याण केन्द्र

श्री राघव राणा 1978 से वनवासी कल्याण आश्रम के पूर्णकालीन कार्यकर्ता हैं। वर्तमान में आप पर वनवासी कल्याण केन्द्र झारखण्ड व बिहार के ग्राम विकास प्रमुख का दायित्व है।

1978 में बिहार में अकाल पड़ा। अनावृष्टि के कारण पलामू जिला सूखा से ग्रस्त हो गया। तत्कालीन बिहार का संभवत: सबसे पिछड़ा जिला है पलामू, जिसका मुख्यालय डाल्टनगंज है। सरकार ने वनवासी कल्याण केन्द्र को रिलिफ वर्क के लिए आमंत्रित किया। Food for Work के तहत खेत सुधारने के लिए जल प्रबंधन का कार्य पलामू के भंडारिया प्रखंड में प्रारंभ हुआ। तत्कालीन संगठन मंत्री श्री कृष्णचन्द्र भारद्वाज (पंजाब से प्रचारक) ने राघव राणा को Food for Work योजना का प्रभारी बनाया। बरियातु प्रखंड के गड़गोगा ग्राम जिला पलामू (अब लातेहार) के श्री राघव राणा स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् इस कार्य में तन-मन से लग गए।

राघव राणा

Food for Work योजना की पूर्णाहुति के पश्चात् वनवासी कल्याण केन्द्र के कार्य में 1979 के मध्य में आए। तब वनवासी कल्याण केन्द्र का क्षेत्र में एक ही कार्यालय या सेवा प्रकल्प था-**वनवासी कल्याण केन्द्र लोहरदगा।** यहाँ एक चिकित्सा केन्द्र व छात्रावास का प्रकल्प था। आपने 1979-1981 तक प्रतिवर्ष नेत्र चिकित्सा शिविर ग्रामीणों के लिए आयोजित किए। 1982 में श्रीकृष्ण चन्द्र भारद्वाज ने पैसे की व्यवस्था के लिए जैन मुनि पू.जयंतीलाल जी के पास पेटरवार भेजा। भारद्वाज जी के पत्रानुसार जैन मुनि जी ने 20 हजार रुपये आर्थिक सहायता (कैश राशि) देकर लोहरदगा नेत्र शिविर सम्पन्न करने के लिए कहा। राघव राणा इस कार्य में भी यशस्वी रहे।

1992 के अंत में राघव राणा को लोहरदगा केन्द्र प्रमुख की जिम्मेदारी दी गई। लोहरदगा केन्द्र पर आर्थिक विकास की दृष्टि से शहतूत की खेती रेशम विभाग के सौजन्य से प्रारंभ हुई। इसके परिणामस्वरूप लोहरदगा जिले के 90 एकड़ में रेशम के पौधे (शहतूत) लगाए गए। केन्द्र परिसर में Vegetable Demonstration Centre बनाया गया। भिंडी, बैगन, आलू, करेला, फ्रेंच बीन्स के प्रयोग किए गए।

1991-92 में वनवासी कल्याण आश्रम व विद्या भारती के सामूहिक चिंतन से गांव के बच्चों के लिए अनौपचारिक शिक्षा के तहत One Teacher School के प्रयोग हुए। राघव राणा ने लोहरदगा जिले में 90 एकल विद्यालय ग्राम-ग्राम में प्रारंभ किए। 2004 से राघव राणा विधिवत् ग्राम विकास के कार्य में लग गए। ग्रामीण परिवारों के स्वावलम्बन में स्वयं

सहायता समूह का बड़ा योगदान है। आज झारखंड, बिहार में 1252 स्वयं सहायता समूह के माध्यम से 15,000 महिलाएं आर्थिक विकास कार्यक्रम में भाग ले रही हैं। कृषि उत्पादन, बागवानी, पशुपालन, पॉल्ट्री, मछली पालन, टसर उद्योग, बांस उद्योग,चावल उद्योग, पत्ता प्लेट निर्माण, जल वितरण योजना, टेंट निर्माण, साउण्ड व्यवसाय आदि में महिलाएं 2 करोड़ का कारोबार कर रही हैं।

वनवासी कल्याण केन्द्र ने 1996 में आंजन (गुमला) कुड्डा (प.सिंहभूम) सेमरा मेड्रोल (प.चम्पारण) तीन ग्रामों को विकास के लिए चुना। ग्राम सर्वे का कार्य भी राघव राणा के नेतृत्व में पूर्ण हुआ। डॉ. बलराम घोष के साथ मिलकर आपने चिकित्सा कार्य एवं एक शिक्षक विद्यालय का कार्य प्रारंभ किया।

ग्राम सभा, ग्राम सफाई, टोटो से आंजन तक सड़क निर्माण, पानी टंकी निर्माण, स्थाई चिकित्सा केन्द्र, टेलीफोन कनेक्शन, विद्यालय निर्माण आदि कार्य आंजन ग्राम में आपके द्वारा दो वर्षों में सम्पन्न हुए।

सुदूर ग्रामीण खास करके वनवासी ग्रामों की महिलाओं को सशक्त करना, उन्हें आर्थिक उन्नयन हेतु प्रेरित करना और इस पुनीत कार्य में उनको सफल बनाना यह बड़ी बात है। ऐसे कार्यकर्ता ही वनवासी ग्रामों में कार्य करते हैं, अपनी तपस्या एवं अपना जीवन लगाते हैं। हमारी आंखें संगठनात्मक व्यस्तता में इनको देख नहीं पाती है। एक संगठक के नाते मैंने आश्रम के कई ऐसे कार्यकर्ताओं को अहर्निश कार्य करते देखा है। ❑

कोलकाता-हावड़ा महानगर की गतिविधियाँ

नवीन कार्यालय का उद्घाटन

गत 25 नवम्बर 2018 को हावड़ा महानगर के नवीन कार्यालय का हवन-पूजन, मंत्रोच्चार आदि धार्मिक क्रियाओं द्वारा विधिवत् उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर कोलकाता-हावड़ा महानगर के सभी कार्यकर्ता एवं सहयोगकर्ता उपस्थित थे। अखिल भारतीय खेलकूद प्रमुख माननीय शक्तिपद ठाकुर ने कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया।

साधन संग्रह अभियान

18 नवम्बर 2018 को महानगरद्वय के कार्यकर्ताओं ने गणेश पूजन कर धनसंग्रह का बिगुल बजा दिया है। कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक माननीय प्रशांत भट्ट ने किया।

झलकारी बाई महिला समिति का गठन

कोलकाता के जैसोर रोड क्षेत्र में 3 दिसम्बर को संगठन विस्तार हेतु झलकारी बाई महिला समिति का गठन किया गया। कामना है कि वनवासी वीराङ्गना झलकारी बाई का स्मरण कराने वाली यह नवीन समिति सेवा और संगठन के नए प्रतिमान गढ़े।

नैपुण्य शिविर के अनुभव

- द्वि दिवसीय इस नैपुण्य शिविर से वनवासी सेवा एवं संगठन कार्य का राष्ट्रीय महत्व समझ आया। यह शिविर बहुत ही प्रेरणादायी था। -सुधा गोयल
- यह मेरा पहला नैपुण्य शिविर था। इस शिविर में जाकर कल्याण आश्रम संबंधी सभी शंकाओं का सहज ही निराकरण हो गया। इस संस्था के कार्यकर्ता समर्पण भाव से कार्य करते हैं। मुझे भी इस राष्ट्र कार्य को करने की प्रेरणा मिली। -

मनीषा सरावगी

अच्चम्मा : जनजाति की एक कर्मठ कार्यकर्ता

राधिका
कार्यालय प्रमुख, आंध्रप्रदेश

विशाखा जिले में पाढेरू के पास मठम गाँव में 1978 में वनवासी कल्याण आश्रम का काम स्व.श्रीधरन जी के प्रयासों से शुरू हुआ। उस समय गाँव की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। न खान-पान की सचमुच व्यवस्था थी न ही ठहरने के लिए उपयुक्त आवास। ऐसी विषम स्थिति में भी श्रीधरनजी कार्यक्षेत्र में डटे रहे। अच्चम्मा एवं उनके परिवार का श्रीधरनजी के माध्यम से कल्याण आश्रम से परिचय हुआ। श्रीधरनजी अक्सर अच्चम्मा को अपनी गोद में बिठाकर शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाते, देश समाज की बातें करते। उम्र के साथ-साथ उसकी देशभक्ति और कल्याण आश्रम के कार्य पर निष्ठा बढ़ती गई। पढ़ाई पूरी कर 18 वर्ष की आयु में अच्चम्मा ने स्वयं को पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में समर्पित कर दिया। तीन वर्ष पश्चात् उनका विवाह हुआ। वैवाहिक जिम्मेदारियों के कारण पहले जितना काम करना संभव नहीं था। दो पुत्र हुए और उसमें से एक विकलांग होने के कारण उसकी ओर विशेष ध्यान देना पड़ता था। फिर भी समय निकालकर वे भजन के कार्यक्रमों के लिए गाँव में जाती थी। 7-8 वर्ष बाद एक बच्चे और पति का दु:खद निधन हुआ, मानो भगवान ने उसकी परीक्षा ही ली। माता की सेवा करने का जिम्मा भी अब अच्चम्मा पर था। कुछ समय बाद और एक हृदय विदारक घटना हुई, माता की भी मृत्यु हो गई। इस प्रकार कई प्रकार की विपदा आई। जीवन में आई प्रतिकूलता को उसने अवसर मानकर फिर से पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन काम करना प्रारम्भ किया। पिछले पाँच वर्षों से वे मठम के कन्या छात्रावास की सम्पूर्ण व्यवस्था देख रही हैं। भगवान ने अच्चम्मा को आशीर्वाद के रूप में कोयल सा कंठ दिया है। उनके भावपूर्ण भजन सुनकर वनवासी महिलाएं भाव विभोर हो जाती हैं। सम्प्रति आप पर आन्ध्रप्रदेश की महिला प्रमुख का दायित्व है।

अच्चम्मा

सम्मान

- 8 मार्च को महिला दिवस के उपलक्ष में इनर व्हील क्लब एवं स्नेह संध्या इन दो संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया।
- 10 जुलाई छत्रपुर (दिल्ली) शनिधाम आश्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक परम पूज्य श्री मोहन जी भागवत के कर कमलों से आपका सम्मान किया गया।
- 19 जुलाई को तेलंगाना की सह महिला प्रमुख एवं उत्तर क्षेत्र की महिला प्रमुख श्रीमती राधिका लड्ढा जी के हाथों विशाखापट्नम (आंध्र) में आपको सम्मानित किया गया।

अच्चम्मा के भावोद्गार

वनवासी कल्याण आश्रम की कार्यकर्ता के रूप में वनवासी क्षेत्र में कार्य करने का सौभाग्य मिला जिसका मुझे गर्व है। इस पत्र के साथ जो राशि मिली है वह मैं कल्याण आश्रम को दे रही हूँ। मैं कल्याण आश्रम का आभार प्रकट करती हूँ जिसने मुझे उद्देश्यपूर्ण जीवन जीना सिखाया। ❑

बारीपाड़ा के योद्धा चैतराम

विश्वास चांदोरकर
कोषाध्यक्ष,वनवासी कल्याण आश्रम, पुणे महानगर

गाँव को बदलने का बीड़ा किसी न किसी को उठाना ही पड़ेगा। उसके लिए न तो संसद में न बिल पास करने की आवश्यकता है न ही नेताओं के भाषणों की। जो लोग गाँव को बदलने का ख्वाब रखते हैं उनके लिए चैतराम जी एक मिसाल हैं। (सं.)

महाराष्ट्र के धुले (धुलिया) जिले का वन बस्तियों में बसा हुआ एक गाँव बारीपाड़ा, तहसील साकी। सन् 1992 तक इस गाँव को कोई नहीं जानता था। इस गाँव में जल स्रोत नहीं थे, इस कारण यह गाँव या इससे जुड़े हुए अन्य क्षेत्र सूखे से पीड़ित थे। किसानों तथा गाँव के लोगों ने कभी हरियाली महसूस नहीं की। पीने के पानी के लिए गाँव वाले आपस में झगड़ते थे। अधिकांश पुरुषों में नशे की लत थी। पूरे ग्राम में अज्ञान, गरीबी एवं बीमारियों का साम्राज्य था। गाँव में न कहीं एकता थी न ही किसी प्रकार की चेतना का अनुभव होता था। ऐसे में विकास नाम की चीज ही नहीं थी। ऐसा ही दृश्य महाराष्ट्र के अनेक छोटे-छोटे ग्रामों में देखने को मिलता था। वर्ष 1992 में इस गाँव के एक युवक चैतराम पवार ने ग्राम को सुधारने का दृढ़ निश्चय किया।

चैतराम पवार

ग्रामीण युवक चैतराम, जिसने अपनी शिक्षा एम.कॉम तक की थी तथा किसी बैंक नौकरी की तलाश में था; उसे बैंक में नियुक्ति होने की चिट्ठी आई तो उसके तथा बारीपाड़ा गाँव के भाग्य खुलने लगे। इसी दौरान इस युवक की पहचान डॉक्टर पाठक जी से हुई जो संघ से जुड़े थे। डॉक्टर जी ने इस युवक को अपने गाँव तथा गाँव वालों की बुरी हालत की जानकारी दी और चैतराम से कहा कि बैंक नौकरी के बजाय क्यों न वह अपने गाँव व बांधवों के विकास के लिए कुछ करे? उन्होंने उस युवक को कहा कि गाँव तथा गाँव वालों की हालात दयनीय है और उस जैसे पढ़े लिखे युवक ही परिस्थिति को बदल सकेंगे। गाँव की उन्नति चाहते हो या नौकरी, यह उसे ही तय करना है। चैतराम को रात भर नींद नहीं आई, विचारों की उधेड़बुन में पूरी रात काट दी। प्रात: जागते ही यह युवक डॉक्टर पाठक जी से मिला तथा उन्हें अपने दृढ़ निश्चय को बताया कि उसने गाँव की उन्नति के लिए नौकरी छोड़ने का मन बनाया है। चैतराम पवार वर्तमान में वनवासी कल्याण आश्रम के देवगिरी प्रांत के अध्यक्ष पद पर हैं।

चैतराम जी ने तुरंत ही विकास का कार्य शुरू किया, गाँव के सभी युवकों को एकत्रित किया; उन लोगों से विचार विनिमय किया। सभी ने एक होकर निर्णय लिया कि गाँव को पूर्ण रूप से नशामुक्त करना है। गाँव में अधिकतम लोग तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, चिरूट, गांजा आदि के शिकार थे। चैतराम जी ने युवकों को कड़े शब्दों में बुरी आदतें छोड़ देने के लिए कहा अन्यथा गाँव में नहीं रहने की हिदायत दी। नशा करने वाले लोगों पर दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी- ऐसी स्पष्ट चेतावनी दी। धीरे-धीरे गाँव के लोगों से व्यसन छूटने लगे। गाँव में एक पाठशाला

है जिसमें ना छात्र आया करते थे, ना ही शिक्षक उपस्थित हुआ करते थ। गाँव के हालात ऐसे थे कि पाठशाला होते हुए भी ना के बराबर ही शिक्षा की व्यवस्था थी। चैतराम जी के नेतृत्व में व्यसनमुक्त युवकों के समूह ने यह निर्णय लिया कि जिस दिन शिक्षक स्कूल में हाजिर ना हो तो उनके वेतन से दंडस्वरुप 100 रुपये काट लिए जाए। वैसे ही किसी पाल्य को स्कूल में हाजिर ना होने से उनके पालकों को भी दंडात्मक कारवाई का सामना करना पड़ता था। हर अनुपस्थिति के दिन 1 रुपये का दंड दिया जाता था। ऐसे सख्ती से स्कूल में छात्रों की तथा शिक्षकों की उपस्थिति सुधरने लगी व विद्यार्थियों की शिक्षा नियमित रूप से होने लगी।

श्री चैतराम जी ने जान लिया था कि गाँव में नागरिकों को, जानवरों को पीने के लिए, खेती के लिए, अन्य साफ-सफाई के लिए पानी की आवश्यकता होने के कारण पानी उपलब्ध करवाने के लिए प्रयास करना आवश्यक है। गाँव के अंतर्गत 445 हेक्टेयर जमीन होने से पानी का स्रोत खोजना एवं पानी के बहाव को बढ़ाना इसे प्राथमिकता में रखा। अधिकतम जमीन बंजर थी। कुछ बोने लायक नहीं होने से इस जमीन को परिवर्तित करने के लिए गाँव वालों को प्रेरित किया। लोगों ने जमीन पर वृक्षारोपण बड़ी मात्रा में शुरू किया। गाँव में बहने वाली नहर को साफ़ किया तथा पानी के स्रोत बढ़ाने के लिए श्रमदान शुरू किया। वनों की जमीन का संरक्षण करने हेतु कुछ कड़े नियमों के आदेश जारी किये। हर नागरिक को गाँव में तथा अपने खेतों व वन क्षेत्र में बिना जूतों के चलने का आदेश दिया गया। श्री चैतराम जी स्वयं पूरे बारीपाड़ा में नंगे पैरों से चलते हैं तथा अन्य नागरिक भी उन्हें आदर्श मानकर बिना जूते-चप्पल पहने घूमते हैं। वन क्षेत्र में पेड़ पौधों को नहीं तोड़ने की हिदायत दी गई। जानवरों को भी यहाँ घास खाने के लिए मनाही थी, बैल गाड़ी या अन्य वाहनों का प्रवेश भी निषिद्ध था। यदि कोई पेड़ पौधों का नुकसान करे तो उस व्यक्ति को या उसके परिवार को दण्डित किया जाता था। गुनाह बताने वालों को पुरस्कार दिया जाता था जिसके फलस्वरुप हरियाली बढ़ने लगी। गाँव की महिलाएँ ईंधन के लिए लकड़ी तोड़ती थी किन्तु इस नयी सोच से ईंधन के लिए सूखी लकड़ी को तथा अपने आप गिरने वाली सूखी लकड़ी को इकठ्ठा किया जाता था। पूरे साल की आवश्यकता अनुसार ईंधन की लकड़ी की पूर्ति की व्यवस्था होने लगी। ऐसे ही कुछ नियम जानवरों को चारा एवं हरियाली की पूर्ति हेतु निर्धारित किए गए। इस व्यवस्था की निगरानी के लिए गाँव के ज्येष्ठ नागरिकों को जिम्मेदारी सौंपी गयी थी। इस नेक कार्य हेतु इन निरीक्षकों के मानधन की व्यवस्था लोक सहयोग से होने लगी। इस अनुशासित प्रणाली से हरियाली बढ़ने लगी और खेती में अच्छी उपज होने लगी। वन या जंगल की उपज की नीलामी द्वारा गाँव की आमदनी बढ़ने लगी। बारीपाड़ा ग्राम समिति की आमदनी बढ़ने लगी। वनों का संरक्षण होने लगा, धीरे-धीरे पेड़-पौधों को वन या जंगलों में परिवर्तित किया जाने लगा। जंगल बनाने से कई पक्षी तथा वन्य जीवों का निवास होने लगा तथा इनकी संख्या बढ़ने लगी। इन जंगलों में कुछ हिंसक पशु जैसे कि भेड़िया, जंगली सूअर आदि दृष्टि में आने लगे। गाँव के समीप वन क्षेत्र में सभी पेड़ों को अंकीकृत किया गया तथा उनके नाम तथा उनके गुणों की जानकारी के फलक लगाए गए। बाहर से प्रेक्षक इस वन क्षेत्र को

देखने के लिए आते थे। इस क्षेत्र में वनौषधि के पेड़, सब्जी-युक्त पौधों की भी जानकारी दी जाने लगी। गाँव के लोगों द्वारा नहर की खुदाई एवं सफाई का काम लोगों के सहभाग से किया जा रहा है। लोक सहभाग द्वारा बंधारा का कार्य पूरा हो गया। इसके साथ ही गाँव की सभी बावड़ियों व कुएं में पानी का स्रोत बढ़ने से पूरे साल भर पानी उपलब्ध होने लगा। खेतों में नए प्रयोग होने लगे। किसानों द्वारा रासायनिक खाद का प्रयोग न करने के कारण गाँव में जैविक खाद का निर्माण होने लगा। गाँव में खेती उपयुक्त जानवर अच्छी मात्रा में होने से गाँव में ही गोबर का उपयोग ईंधन के लिए होने लगा। प्रत्येक घर में गोबर गैस का उपयोग रसोई तथा रौशनी के लिए होने लगा। गोबर के उपयोग से राख उपलब्ध होने लगी जिससे जमीन की गुणवत्ता उत्तम होने लगी। मिट्टी की गुणवत्ता अच्छी होने से कृषि में कई प्रयोग होने लगे। नियमित फसलों के अलावा कुछ प्रकार की सब्जियां, फूल-पौधे, वन-औषधि के पेड़, फल आदि की पैदाइश होने लगी। नियमित फसलें जैसे नागली (रागि), तुअर, मूंग, ऊड़द, ज्वार, बाजरा, वरई, धान या चावल के साथ ही प्याज, लहसुन, आलू, सोया, गन्ना, बासमती व इंद्रायणी किस्म का चावल, इमली, कटहल, बादाम, आम, संतरा, मोसम्बी, अमरुद, स्ट्राबेरी इत्यादि की भी किसानों द्वारा उपज होने लगी। फलों की खेती के लिए सिंचाई में परिवर्तन किया जाने लगा। खेती में ड्रीप इरिगेशन का प्रयोग काफी मात्रा में होने लगा। कृषि उपज बढ़ने से गाँव वाले अनाज तथा सब्जियों को पास की मंडियों में बेचने लगे। गाँव में महुआ की उपज होती थी, इसके फूल, फल औषधि गुणों से युक्त होने के कारण इनको महिलायें सुखाने लगी; इन फलों व बीजों का तेल निर्माण में उपयोग होने लगा। इस तेल का दवाई/मालिश के लिए उपयोग किया जाने लगा। अन्य बीजों का उपयोग ईंधन के लिए होने लगा। किसानों को अच्छी आमदनी होने लगी। गाँव की महिला नागली के पापड़, फलों का रस/पेय, मुरब्बा आदि तैयार करती तथा अपनी आमदनी बढ़ाने लगी। कृषि जगत में यह एक प्रकार की क्रांति थी। कृषि पंडित इस गाँव के निरीक्षण हेतु बारीपाड़ा गाँव पहुँचने लगे और श्री चैतराम जी से मुलाकात करने लगे। इस उपलब्धि के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह गाँव प्रसिद्धि में आ गया।

आमदनी बढ़ने के कारण किसान सम्पन्न होने लगे। उन्होंने यह तय किया कि ग्रामवासी सरकारी अनुदान का लाभ नहीं लेंगे। गाँव के सभी निवासियों ने अपने-अपने सरकारी अनुदान वाले राशन कार्ड लौटा दिए; **यह (बारीपाड़ा) गाँव देश का पहला केंद्र बना जहाँ बिना अनुदान की जिंदगी सभी नागरिक जी रहे हैं। कृषि से जुड़े हुए उद्योग भी बढ़ने लगे, जैसे कि पशुपालन, कुक्कुट पालन, वराह पालन, महिलाओं द्वारा गृह उद्योग जिसके द्वारा पापड़, आचार, मुरब्बा, अनेक प्रकार के मसाले आदि का उत्पादन होने लगा।** पुरुष भी पीछे नहीं थे क्योंकि वे भी पलाश के पत्तों से पत्तल, द्रोण (कटोरी), तंतु से रस्सी बनाना, दूध व्यवसाय से दही, छाछ, मक्खन, घी, खोवा का व्यापार करने लगे। बासमती व इंद्रायणी चावल भी बाहर की मंडियों में भेजे जाने लगे। गाँव में उपजे फल जैसे कि अमरूद, आम, स्ट्राबेरी महाराष्ट्र के महानगरों तक पहुँचने लगे। स्ट्राबेरी मात्र सातारा जिले के एक

ठंडे इलाके में ही उपजाई जाती हैं क्योंकि वहाँ इस फल के लिए पोषक ठंडा मौसम होता है तथा इस गरम बारीपाड़ा में ठंडे मौसम जैसी परिस्थिति निर्माण की जा रही है - ड्रीप सिंचन या तो तुषार सिंचन के माध्यम से। गाँव की सूखे की परिस्थिति बदल कर जल से परिपूर्ण हो गयी। बारीपाड़ा गाँव जैसे अन्य गाँव भी महाराष्ट्र के कई जिलों में बनने लगे।

श्री चैतराम पवार के कार्य अनेक संस्थाओं की नजर में आने लगे। देश की कुछ संस्थाओं ने उनके कार्य को गौरवान्वित किया। महाराष्ट्र के कुछ शहरों में श्री चैतरामजी का सत्कार होने लगा तथा उनके कार्य की प्रशंसा होने लगी। राष्ट्रीय स्तर पर भी उन्हें गौरवान्वित किया जाने लगा। बारीपाड़ा गाँव का इस दिशा में जो बदलाव हुआ उससे रोजगार बढ़ने लगा। बारीपाड़ा के वन क्षेत्र में 382 वनस्पति की पैदाइश होने लगी, 42 प्रकार के पक्षी/चिड़ियाँ इस जंगल में निवास के लिए आने लगे। इन वनस्पतियों में से लगभग 32 ऐसे पेड़-पौधे हैं जो दुर्लभ हैं। श्री चैतराम जी के प्रयास से पर्यावरण में सुधार होने लगा साथ ही पर्यावरण संरक्षण हेतु कार्यरत अनेक समितियों द्वारा विशेषज्ञ के रूप से उन्हें आमंत्रित भी किया जाता है। पानी समस्या दूर होने से अन्य ग्रामों को भी ऐसे ही प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहन मिलने लगा। श्री चैतराम जी ने जन,जंगल,जानवर,जल यानि '4ज' को परम मानते हुए उनका संरक्षण और संवर्धन करने के लिए जनसमूह को एकत्रित किया। श्रमदान से लगभग 300 बंधारों का निर्माण किया। श्री चैतराम जी को अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं जिनमें से कुछ प्रतिष्ठित सम्मान निम्नानुसार हैं-

- आदिवासी अस्मिता जागरण पुरस्कार, वर्ष 2001
- IFAD(इंटरनेशनल फण्ड फॉर एग्रीकल्चर डेवलपमेंट) इफाद रोम पुरस्कार, वर्ष 2003
- महाराष्ट्र शासन शेती निष्ठा पुरस्कार, वर्ष 2004.
- नीरा गोपाल पुरस्कार, वर्ष 2008.
- महाराष्ट्र शासन आदिवासी सेवक पुरस्कार, वर्ष 2014.
- UNDP (United Nations Development Programme) पुरस्कार वर्ष 2014, पोर्ट ब्लेयर में केंद्रीय पर्यावरण मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर से सम्मानित।
- BOMREWO (बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र रिटायर्ड एम्प्लाइज वेलफेयर आर्गेनाईजेशन) पुणे द्वारा सामाजिक कार्य के लिए पुरस्कृत, वर्ष 2015.
- नातू फाउंडेशन, पुणे द्वारा समाज सेवा का पुरस्कार, वर्ष 2015.
- वसंतराव नाईक ग्राम विकास पुरस्कार, वर्ष 2016 मुंबई में सम्मानित।
- पु.भा.भावे पुरस्कार, वर्ष 2015-2016 श्री जयंतराव सालगावकर द्वारा सम्मानित।
- वसुंधरा सम्मान जलगाँव।
- संत तुकाराम वन पुरस्कार, महाराष्ट्र शासन द्वारा।
- संस्कार कवच श्री नितिन गडकरी द्वारा नागपुर में सम्मान।
- वसुंधरा सम्मान जलगाँव।
- डॉक्टर हेडगेवार कृतज्ञता पुरस्कार।
- वर्ष 2014 से 2016 में केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय द्वारा सलाहकार के रूप में सदस्यता।
- महाराष्ट्र शासन द्वारा कई समितियों के सलाहकार के रूप में सदस्यता।

श्री चैतराम जैसा नेतृत्व यदि स्थान-स्थान पर हों तो हमारे देश के सभी ग्राम **सुजलाम् सुफलाम्** होने में समय नहीं लगेगा। ❑

सर्वात्मना समर्पित व्यक्तित्व : श्री रूपसिंह भील

राधिका लड्ढा
उपाध्यक्ष, राजस्थानी वनवासी कल्याण केन्द्र

12 जुलाई, 1934 में उदयपुर जिले के खैरवाड़ा तहसील के बिलख ग्राम में जन्मे रूपसिंह जी ने 1954 में महाराणा भूपाल कॉलेज से स्नातक उपाधि प्राप्त कर टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल साईन्स मुंबई से दो विषयों में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त की।

1956 में राजस्थान के समाज कल्याण विभाग में सेवारत हुए। अपने शासकीय सेवाकाल में जनजाति बंधुओं के उत्थान हेतु शासकीय व्यवस्था का निर्माण किया। शासन द्वारा जनजाति वर्गों की प्रगति हेतु गठित **बार कमीशन** में आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी एवं पिछड़ी जनजातियों की स्थिति के शोधपूर्वक सर्वे से शासन को अवगत कराया। जनजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्था, उदयपुर के आप 20 वर्षों तक सक्रिय सदस्य रहे। जनजाति बंधुओं के लिये आपका शासकीय स्तर पर प्रयास तो रहा ही, आपने इन्हीं विषयों पर अनेकानेक लेख भी लिखे। आपके द्वारा विभिन्न प्रकार के जनसांख्यिकी आंकड़ों का विशेष अध्ययन किया जाता रहा, जिसमें धर्मान्तरण के कारण हुए जनसंख्या असन्तुलन को लेकर वे विशेष रूप से चिन्तित रहते थे। आप शांत, प्रसन्नचित एवं सौम्य स्वभाव के चिंतक एवं शोध प्रकृति वाले व्यक्ति थे। आपने राजकीय, राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय जनजाति संबंधी सम्मेलनों में सक्रिय भागीदारी की। आपके विशाल दृष्टिकोण, सरल कार्य प्रणाली के लिये सन् 1988 में 'महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन' ने **राणा पूंजा अवार्ड** से आपको सम्मानित किया।1992 में आप शासकीय समाज कल्याण विभाग के सह-निदेशक पद से ससम्मान निवृत्त हुए। शासकीय सेवा के पश्चात् वनवासी बंधुओं के हित चिंतन करते हुए वनवासी कल्याण आश्रम से जुड़े एवं जीवन भर वनवासियों के विकास हेतु प्रयासरत रहे।

श्री रूपसिंह भील

उल्लेखनीय कार्य :

दक्षिण राजस्थान के वनांचल में भक्ति आन्दोलन के प्रणेता गोविन्द गिरि की जन्म जयंती मनाने हेतु प्रयत्न :

भक्ति आन्दोलन के माध्यम से अंग्रेजों के विरुद्ध जबरदस्त आन्दोलन खड़ा करने वाले संत गोविन्द गिरि का जन्म डूंगरपुर जिले के छोटे से गांव बांसियां में हुआ था। उन्होंने बांसियां ग्राम में धूणी स्थापित कर भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात किया। बाद में यह स्थान गिरिधाम के रूप में स्थापित हो गया जहां दर्शन करने गुजरात, मध्यप्रदेश और राजस्थान के अनेक भक्त आते रहते हैं। किन्तु दु:ख की बात यह थी कि गोविन्द गिरि के वंशजों के बीच दो फाड़ हो गई और वहां एक नहीं दो पीठाधीश्वरों के कार्यकलाप चलने लगे। दोनों के बीच मतभेद भी होते और दोनों अपने आप को एक दूसरे से बड़ा सिद्ध करने में जुटे रहते। भक्तगण बड़ी आस्था से वहां आते किन्तु बांसियां में आकर दुविधा में पड़ जाते और उनकी आस्था भी

डोलने लगती। इस सारे झमेले का लाभ लेकर एक ओर कम्युनिस्ट तथा दूसरी ओर ईसाई मिशनरियों को अपना स्वार्थ सिद्ध करने का अच्छा अवसर मिल गया। यह सब जानकारी माननीय रूपसिंह जी को भी थी; जिसकी उनके मन में बड़ी पीड़ा थी। एक दिन उन्होंने इस विषय की चर्चा कार्यालय में की और योजना बना कर बांसियां गये। रूपसिंह जी के अनेक बार प्रयत्न करने के बाद अंतत: दोनों महंतों ने एक गादी पर बैठने का प्रस्ताव स्वीकार किया तथा वनवासी कल्याण परिषद् के सहयोग से भव्य गोविन्द गिरि जन्मोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कम्युनिस्टों ने बहुत कोशिश की इसे असफल करने की, किन्तु अन्त में उन्हें ही मुंह की खानी पड़ी और तब से लेकर आज तक बांसियां ग्राम में हर वर्ष 20 दिसम्बर को यह कार्यक्रम होता है एवं पूरी रात्रि भजन-कीर्तन-सत्संग की छटा छायी रहती है।

जैन एवं वनवासी समाज के बीच सुलह :

ऋषभदेव नामक स्थान पर भगवान ऋषभदेव का भव्य मंदिर है जिसे वनवासी कालाबाबा और जैन समाज केसरियाजी के नाम से जानते हैं। यह मूर्ति मूलत: एक वनवासी को खुदाई में मिली तो वनवासी समाज ने बड़ी श्रद्धा-भक्ति से स्थापित की। कोई भी शुभ कार्य हो तो काला बाबा की आज्ञा से और मौत मरण में भी उन्हीं के सम्मुख दु:ख व्यक्त करना, यह वनवासियों की परम्परा बन गई। खेतों में धान पक जाये तो प्रथम धान की बाली काला बाबा को चढ़ेगी, तब ही घर में उपयोग होगा, ऐसी आज भी परम्परा है। इधर जैन समाज को लगा कि यह तो भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा है तो उनका सहज ही श्रद्धा भाव बढ़ा और ऋषभदेव ने धीरे-धीरे जैनों के तीर्थ स्थल के रूप में ख्याति प्राप्त की। अनेक भक्तों की मन्नतें पूरी होती तो वहाँ बोली गई मात्रा में केसर चढ़ाई जाती। सदियों से वनवासी और जैन दोनों श्रद्धा भाव से भगवान का पूजन अर्चन करते रहे। किन्तु उनके मालिकाना हक के लिये कोर्ट में केस चल रहा है। योगानुयोग से दलीलें आगे बढ़ी तो दोनों समाज की भिडंत हो गई, दोनों समाज एक दूसरे को मरने मारने पर उतारू हो गये; स्थिति तनावपूर्ण हो गई। कोई समाधान नहीं निकल रहा था। ऐसे में स्व. रूपसिंह जी ने मोर्चा संभाला और दोनों समाजों के बीच मध्यस्थता कर सुलह करवाई तथा ऋषभदेव स्थान पर उत्पन्न हुई तनाव पूर्ण स्थिति को आपने कुशलतापूर्वक समाप्त किया था।

राणा पूंजा जन्म जयंती :

महाराणा प्रताप व अकबर के बीच हल्दीघाटी में युद्ध हुआ तब मेवाड़ के वनवासी वीरों ने युद्ध में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया जिनका सफल नेतृत्व पानरवा गांव के भील **राणा पूंजा** ने किया और अप्रतिम शौर्य का परिचय दिया। भील समाज के ऐसे गौरव पुरुष को इतिहास में एवं समाज में स्थान दिलाने के लिये स्वर्गीय रूपसिंह जी ने जो राजस्थान वनवासी कल्याण आश्रम के तत्कालीन अध्यक्ष थे, केवल सामाजिक स्तर पर ही नहीं, प्रशासनिक स्तर पर भी प्रयत्न किए और 5 अक्टूबर को राणा पूंजा की जन्म जयंती धूम धाम से मनाने का समाज का मन बनाया। भारत के जनजाति समाज के सर्वांगीण विकास हेतु जीवन भर प्रयासरत रहने वाले अखिल भारतीय वनवासी कल्याण के उपाध्यक्ष एवं राजस्थान वनवासी कल्याण के अध्यक्ष श्री रूपसिंह जी भील का 75 वर्ष की आयु में दिनांक 10.09.2008 को अपने निजी निवास स्थान उदयपुर (राजस्थान) में हृदयाघात से आकस्मिक निधन हो गया। उनकी पावन स्मृति को नमन। ❑

सेवा के पर्याय : कृतिवास महतो

शक्तिपद ठाकुर
खेलकूद प्रमुख, अ.भा.व.कल्याण आश्रम

कुछ लोग इतने महान होते हैं कि मृत्यु के बाद भी वे देश की स्मृति को सुगन्धित करते रहते हैं। ऐसे लोगों में एक अग्रणी नाम है स्व.कृतिवास महतो। बंगाल के बागमुण्डि जिला के खटकाडिह गांव में आपका जन्म हुआ। प्रारंभिक शिक्षा सरकारी विद्यालय में हुई। उस समय आप गांव के सबसे पढ़े-लिखे युवक माने जाते थे क्योंकि आपने नौवीं कक्षा तक की पढ़ाई पूरी की थी। स्वभाविक रूप से ग्रामवासी आपको विशेष सम्मान देते थे। अयोध्या पहाड़ पर पोस्ट मास्टर एवं विद्यालय के अध्यापक का दोहरा दायित्व आपने निभाया। अयोध्या पहाड़ की अपनी जमीन को L.W.S. (लुथरन वर्ल्ड सर्विस) द्वारा संचालित चिकित्सा केन्द्र के लिए प्रदान की। 1977 में कल्याण आश्रम के कार्य को जब अखिल भारतीय स्वरूप मिला तो वनवासी सेवा कार्य के विस्तार हेतु तत्कालीन प्रांत संगठनमंत्री मा.बसंतराव भट्ट, श्री मदन मित्र, श्री विश्वनाथ बिस्वास एवं बागमुंडि सम्मेलनी क्लब के सेक्रेटरी नागरंजन गांगुली महोदय जीप से अयोध्या पहाड़ जाकर कृतिवास महतो से मिले। मध्याह्न के समय 4 लोगों को अपने घर पर देखकर कृतिवास दा एक बार संकोच में आ गए। उन्हें लगा कि इतने लोगों की भोजन की तत्काल व्यवस्था करना कष्टकर होगा। किन्तु बसंतदा के ऋषितुल्य व्यक्तित्व एवं बातचीत से बहुत प्रभावित हुए। बसंत दा ने उनको स्पष्ट कहा कि आपने जो जमीन L.W.S. को दी है वह राष्ट्र निर्माण का नहीं राष्ट्रविरोधी कार्य है। क्योंकि ईसाईयों का दूरगामी लक्ष्य केवल धर्मान्तरण है। कृतिवास दा को तत्काल अपनी भूल का अनुभव हुआ। उन्होंने विचार किया कि अपनी भूल का प्रायश्चित करना ही चाहिए। तत्काल बागमुण्डि के अपने आवास को कल्याण आश्रम के छात्रावास हेतु देने की स्वीकृति दे दी। बसंतराव जी की सीधी, सच्ची बातें कृतिवास जी की हृदय को स्पर्श कर गयी और उनके आवास पर बागमुण्डि छात्रावास प्रारम्भ हो गया। आज कल्याण आश्रम के कार्य की स्वीकार्यता इतनी अधिक है कि कोई भी व्यक्ति या संस्था संगठन को अनुदान देकर धन्यता का अनुभव करता है। किन्तु 1978 में परिस्थितियाँ बहुत ही प्रतिकूल थी। कल्याण आश्रम के लिए समाज के बंधुओं से सहयोग मांगना बहुत ही दुष्कर कार्य था।

कृतिवास महतो

कृतिवास दा ने अपनी जमीन ही नहीं दी, आजीवन कल्याण आश्रम के कार्यों के साथ तन-मन से जुड़े रहे। 1978 में प्रथम बार अयोध्या पहाड़ पर उनके द्वारा श्रीरामनवमी उत्सव का धूमधाम से पालन किया गया। स्वयं कृतिवास दा ने बांग्ला भाषा में कृतिवासीय रामायण का पारायण किया। जनश्रुति है कि रावणवध के पश्चात् पुष्पक विमान से अयोध्या

लौटते समय माता सीता को प्यास लगी। हनुमान जी ने विमान से उतरकर अयोध्या पहाड़ पर अपनी गदा रखी। तत्काल वहां पर मीठे जल का झरना प्रवाहित होने लगा। माता सीता ने वहीं स्नान कर विश्राम किया था अत: उस स्थान का नाम अयोध्या पहाड़ पड़ गया। 1978 में प्रारंभ हुई रामनवमी उत्सव की परम्परा प्रतिवर्ष अव्याहत रूप से जारी है। ग्रामवासी अपने दाल चावल आदि सामग्री लेकर आते हैं, वहां खिचड़ी का प्रसाद पाकर धन्य महसूस करते हैं। कृतिवास दा का जुड़ाव कल्याण आश्रम के कार्य से दिनानुदिन बढ़ता गया।

वनवासियों को भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक प्रोत्साहन देना उनका जीवन व्रत बन गया।अयोध्या पहाड़ पर आने वाले सभी कार्यकर्ताओं की चिंता करते, उनकी सुख सुविधा का ध्यान रखते हुए उनके भोजनादि की व्यवस्था करने को सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे। वर्षों तक बागमुण्डि कल्याण आश्रम के संरक्षक के रूप में अपनी भूमिका का बखूबी निर्वाह किया। प्रथम बार जो व्यक्ति 4 कार्यकर्ताओं के भोजन की व्यवस्था करने में स्वयं को अक्षम पाता है वे ही कृतिवास दा समय-असमय आने वाले सभी कार्यकर्ताओं के लिए बरगद की सी घनी छांव देने वाले सिद्ध हुए। कार्यकर्ताओं के बीच वह विश्वसनीयता अर्जित की जो विरलों को ही नसीब होती है। पूर्वांचल कल्याण आश्रम, कोलकाता हावड़ा महानगर ने उन्हें उनकी सेवा वृत्ति एवं वनवासी समाज के विकास में योगदान हेतु कोलकाता के कलामन्दिर प्रेक्षागृह में सम्मानित किया। आज कृतिवास दा सशरीर हमारे बीच नहीं हैं किन्तु वनवासी प्रेम एवं सेवाकार्यों के लिए अतुलनीय योगदान हेतु सदैव याद किए जाते रहेंगे। ❑

अभिनन्दन

आयुष गोयल की उल्लेखनीय उपलब्धि

कोलकाता महानगर के चिकित्सा आयाम प्रमुख श्री

विवेक गोयल के सुपुत्र आयुष गोयल ने AIMS PG प्रवेश परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त कर न केवल अपने परिवारजनों को अपितु पूरे कल्याण आश्रम परिवार को गौरवान्वित किया है। प्रत्येक छात्र का एम्स में दाखिला पाने का स्वप्न रहता है। किन्तु सीमित भर्ती संख्या होने के कारण यह सौभाग्य विरलों को ही मिल पाता है। ध्यातव्य है कि 2013 में NEET की परीक्षा (एमबीबीएस हेतु दाखिला) में भी आयुष ने प्रथम स्थान (720 में से 696 अंक) प्राप्त किया था। पदार्थ विज्ञान और रसायन शास्त्र में इसे शत प्रतिशत अंक मिले एवं AIMS दिल्ली में दाखिला मिला। इसके बड़े भाई डॉ. किशन गोयल ने भी एम्स से ही एम.डी. एवं डीएनबी की है, अब वे क्रिटिकल केयर में फेलोशिप कर रहे हैं। आयुष का पूरा परिवार (दादी, माँ, पिता) वनवासी सेवा कार्यों से अभिन्न रूप से जुड़ा है। अपनी उपलब्धियों का श्रेय आयुष सदैव अपने परिवारजनों की सेवाभावना एवं पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा समय-समय पर आयोजित होने वाले चिकित्सा शिविरों को देता है क्योंकि वहां जाकर ही उसे डॉक्टर बनने एवं जरूरतमंदों की तन-मन से सेवा करने की प्रेरणा हुई। कल्याण आश्रम परिवार आयुष के सेवा समर्पित उज्जवल भविष्य की कामना करता है। ❑

जगदेवराम उरांव
अध्यक्ष, अ.भा.व.कल्याण आश्रम

नागालैण्ड में कल्याण आश्रम के पुरोधा:

श्री जगदम्बा मल्ल

श्री जगदम्बा मल्ल मूलत: उत्तरप्रदेश, देवरिया के रहने वाले हैं। आप बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक हैं। आप सन् 1975 के आपातकाल पूर्व नागालैण्ड के डीमापुर चले गये थे। डीमापुर में आपने ईसाई स्कूल में अग्रेजी शिक्षक की नौकरी की। आप डीमामुर में संघ की शाखा लगाते हैं। लोग आपको मास्टर जी के नाम से जानते थे। बाद में आपको नागालैण्ड के ए.सी.ऑफिस में नौकरी मिल गयी। आप कोहिमा में रहने लगे। वहाँ पर आपने नागालैण्ड के समाज और वहाँ की परिस्थिति का अध्ययन किया। आपने हैपाऊ जादोनांग द्वारा ब्रिटिश शासन के विस्तार को रोकने के प्रयास तथा धार्मिक सांस्कृतिक चेतना जागरण के लिए हरक्का आन्दोलन, हेपाऊजादोनांग को ब्रिटिश शासन द्वारा फांसी पर लटकाए जाने के बाद उनके स्थान पर जेलियांगरांग हरक्का आन्दोलन का नेतृत्व करने वाली रानीमाँ गाइदिन्ल्यू के जीवन और नागालैण्ड में बढ़ रहे आंतकवाद का गहराई से अध्ययन किया। प्रारंभ में आपको हरक्का आन्दोलन के कार्यक्रमों में जाने से रोका जाता था। आपको उनकी मार-पीट भी सहनी पड़ी। आपने रानी माँ के निकट सहयोगी के रूप में विश्वास का अर्जन किया। 1975 के आपातकाल की समाप्ति के बाद कल्याण आश्रम को अखिल भारतीय रूप दिया गया। मा. बसन्तराव भट्ट जी को उत्तर पूर्वांचल का दायित्व दिया गया था। नागालैण्ड के प्रवास के समय मा. बसन्तराव जी भट्ट ने आपके ऊपर नागालैण्ड के सगठन मंत्री का दायित्व दिया था। उस समय मा.निशीकान्त जोशी जी उत्तर पूर्वांचल के संगठन मंत्री थे ।

जगदम्बा मल्ल

सन् 1978 में पूज्य बालासाहब देशपाण्डे जी का नागालैण्ड में प्रवास हुआ। कोहिमा में रानी माँ गाइदिन्ल्यू से भेंट हुई । रानी माँ और पूज्य बाला साहब के बीच लम्बी बातचीत हुई। पूज्य बालासाहब रानी माँ की तेजस्विता से बहुत प्रभावित हुए। उस समय जगदम्बा मल्ल जी भी साथ में थे। जगदम्बा मल्ल जी ने रानी माँ के नागामी भाषा का अनुवाद हिन्दी में किया था। उसी समय कोहिमा में रानी माँ के परम सहयोगी श्रीमान् एन.सी. जेलियाग से भी पूज्य बाला साहब की भेंट हुई थी। कोहिमा से वापस आते समय डीमामुर में व्यवसायियों के बीच बैठक रखी गयी थी। पूज्य बालासाहब ने कल्याण आश्रम का विषय सबके सामने रखा था। सबको अच्छा लगा था। लोगों ने कल्याण आश्रम के कार्य के लिए कार्यकर्ता की मांग की। पूज्य बालासाहब ने जगदम्बा मल्ल जी को खड़ा किया और कहा कि ये हमारे नागालैण्ड के कार्यकर्ता हैं तो लोगों ने कहा इन्हें तो हम जानते हैं। ये मास्टर जी हैं, यहां शाखा लगाते हैं। जगदम्बा मल्ल जी पहले से ही कल्याण

आश्रम का काम कर रहे थे। आप रानी माँ के अनन्य सहयोगी थे। तत्कालीन अखिल भारतीय संगठन मंत्री मा. रामभाऊ गोडबोले जी का प्रवास नागालैण्ड में हुआ था। उन्होंने जगदम्बा मल्ल जी को रानी माँ और एन.सी.जेलियांग के निकट सहयोगी के रूप में काम करने का निर्देश दिया था जिसका आपने निष्ठापूर्वक निर्वाह किया। आपकी निष्ठा एवं परिश्रम का ही परिणाम था कि धर्म स्वातंत्र्य विधेयक 1978 के समर्थन में रानी माँ ने महामहिम राष्ट्रपति को लम्बा पत्र लिखा था। रानी माँ का आगमन जनवरी 1979 में प्रयाग राज में द्वितीय विश्व हिन्दू सम्मेलन में भाग लेने के लिए हुआ था। श्रीमान एन.सी.जेलियांग जी का आगमन प्रथम अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम कार्यकर्ता सम्मेलन में मुख्य अतिधि के रूप में 18 नागा प्रतिनिधियों के साथ दिल्ली में हुआ था। यह सब जगदम्बा मल्ल जी के कठिन परिश्रम का ही परिणाम था। जगदम्बा मल्ल जी प्रारंभ से ही रानी माँ के साथ छाया की भांति कार्यरत रहे। आपने रानी माँ के जीवन पर पुस्तक लिखी है जिसका प्रकाशन 2016 में हुआ था। पुस्तक में आपने रानी माँ के जीवन के अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला है जो अन्यत्र दुर्लभ है। आपकी दूसरी पुस्तक **'हेपाऊ जादोनांग : स्वतंत्रता सेनानी'** का प्रकाशन हो रहा है। जगदम्बा मल्ल जी हिन्दी और अंग्रेजी के स्तम्भ लेखक हैं। पाञ्चजन्य, आर्गनाइजर एवं वनबन्धु आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख प्राय: पढ़ने को मिलते हैं।

जगदम्बा मल्ल जी ने अपनी कर्मठता से प्रतिकूल परिस्थितियों में तो सतत् कर्मरत रहे ही, अपने कर्तृत्व से साधारण जीवन जीते हुए असाधारण व्यक्तित्व के रूप में सम्मानित प्रतिष्ठित हैं। ❑

अनुकरणीय

-सीमा रस्तोगी

महानगर महिला समिति की **दीपक योजना** शहरी समाज एवं वनवासी समाज को ही प्रदीप्त नहीं करती बल्कि विदेशों में रहने वाले अपने स्वजनों, मित्रों को भी प्रेरित कर रही है। इंग्लैंड में रहने वाली मेरी भाभी श्रीमती निशा रस्तोगी ने दीपक योजना के प्रति अपना आभार जताते हुए मुझे यह पत्र प्रेषित किया..

Pranam Seema !

I have been using the diyas I got from you in 2015. Think they are from some women's group. Every year I have used 4 diyas along with others from here. My stock is running low now- may last till next year. The quality of diyas here is different. They are not pretty. Just to inform you, still enjoying your diyas.

Nisha Navin Rastogi

यह पत्र पढ़कर मेरा और सभी कार्यकर्ता बहनों का जोश और उत्साह बढ़ गया। मन में प्रेरणा जगी कि अधिक संख्या में दीपक बनाएं और **'चलो जलाएं दीप वहां, जहां अभी भी अंधियारा है'** की उक्ति को साकार करें।

.....

महानगर महिला समिति कार्यकारिणी सदस्या एवं साल्टलेक समिति की सक्रिय समर्पित कार्यकर्ता श्रीमती कृष्णा अग्रवाल एवं शिवकुमार जी अग्रवाल के घर जुड़वां पोता-पोती के रूप में खुशियों ने दस्तक दी है। आनन्द के इस अवसर पर उन्होंने गत 24 नवम्बर को संगठन से जुड़े सभी कार्यकर्ता बंधु/भगिनियों को सुरुचिपूर्ण भोजन करवाया। मूलत: आध्यात्मिक रुझान रखने वाली कृष्णा जी का कल्याण आश्रम की सभी गतिविधियों विशेषकर राम कथा एवं भागवत कथा में सक्रिय भागीदारी रहती है। कल्याण आश्रम परिवार की ओर से बधाई। ❑

साधारण छवि, असाधारण साधना

कृपा प्रसाद सिंह
उपाध्यक्ष, अ.भा.व.कल्याण आश्रम

तिलक जी यानि तिलकराज कपूर का स्मरण होते ही एक अत्यंत सरल हृदय, कर्मठ व्यक्तित्व मनश्चक्षु के सामने खड़ा हो जाता है। उनकी कर्मठता देखकर लगता ही नहीं था कि बढ़ती उम्र का उनकी दिनचर्या पर असर पड़ा है। कार्यकर्ता के दु:ख कष्टों को देखकर उनकी आँखों में आंसू आ जाते थे। तिलक जी युवावस्था में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आए और संघ कार्य से एकरूप हो गये। जब देश विभाजन की चर्चा चल रही थी तब मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में हिन्दुओं पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा था। दिल्ली-सहारनपुर मार्ग पर पठानों के 52 गांवों में आतंक मचा हुआ था। हिन्दुओं पर घोर अत्याचार किए जा रहे थे। यह देखकर तिलक जी शांत बैठे न रहे सके। उन गाँवों में जाकर उन्होंने हिन्दुओं में आत्मविश्वास जगाया, अत्याचारों का प्रतिकार किया। आपातकाल के दिनों में तिलक जी मुजफ्फरनगर के जिला प्रचारक थे। यहां आपातकाल के विरोध में 200 स्वयंसेवकों ने सत्याग्रह कर के कारावास स्वीकार किया। बाद में तिलक जी भी गिरफ्तार हुए। उन्हें जेल में कठोर यातनाएं दी गईं। 1980 में तिलक जी अखिल भारतीय कल्याण आश्रम के कार्य से जुड़ गए। शुरुआत में पश्चिम उत्तर प्रदेश के प्रांतीय संगठन मंत्री और कुछ वर्षों बाद उत्तर क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन मंत्री का दायित्व संभाला जिसे पूरी निष्ठा से निभाया। सन् 1985 में तिलक जी ने लद्दाख में कार्य प्रारंभ किया। वहां के धर्मगुरुओं, लामाओं से सम्पर्क किया एवं उनकी सामाजिक कुप्रथाओं की ओर ध्यान दिलाया जिस कारण बौद्ध युवक मतांतरण कर रहे थे। फिर उनके द्वारा इस संबंध में एक प्रस्ताव भी पारित करवाया। जिसके अनुसार लामा (सन्यासी/सन्यासिनी) बनना अनिवार्य नहीं रहा। दुर्गम हिमालयी क्षेत्र में उनका निरंतर प्रवास होता रहता था। **एक बार उन्होंने दो महिलाओं को एक जलती बस से बाहर निकाल कर उनका जीवन बचाया। इस दौरान वे बुरी तरह झुलस गए और बाद में कई दिनों तक उन्हें अपना इलाज करवाना पड़ा।** तिलक जी का जीवन इतना सरल, सहज, सादगीपूर्ण था कि उनके द्वारा कही गई बात कार्यकर्ता सहर्ष स्वीकार कर लेते थे। उनका दिन प्रात: 3 बजे से प्रारंभ होता, सुबह की चाय स्वयं बनाते तथा स्नानादि के बाद प्रतिदिन पत्र-लेखन के लिए बैठते थे। रोजाना 15-20 पत्र तो लिखते ही थे। तिलक जी के समर्पण भाव से प्रभावित होकर एक सज्जन ने उनके नाम अपने 10 एकड़ जमीन के कागजात उन्हें सौंप दिए। तिलक जी ने यह सारी जमीन विद्याभारती को विद्यालय प्रारंभ करने के लिए दे दी। उन्होंने दो बार एम.ए., बी.एड. एवं एल.एल.बी. की उपाधि विशेष योग्यता के साथ अर्जित की। उनका पार्थिव शरीर आज नहीं है किन्तु उनके कार्य सदैव याद किये जाते रहेंगे। ❑

तिलकराज कपूर

सेवा की सौरभ बिखेरती बुधरी ताती

तुलसीराम तिवारी
प्रांत संगठन मंत्री, छत्तीसगढ़

सेवा-इस शब्द के साथ कुछ लोगों का गहरा संबंध होता है। समय के साथ यह भाव इतना गहरा होता जाता है कि वे अपना समग्र जीवन ही परोपकार के लिए समर्पित कर देता है। इनके जीवन का एक ही लक्ष्य है-सभी से प्रेम करो, सभी की सेवा करो। दंतेवाड़ा के हीरानार गाँव में 15 सितम्बर 1966 में जन्मी बुधरी ताती स्व.चैतूराम ताती और माता श्रीमती सोनी बाई के पांचवी संतान हैं। 15 वर्ष की आयु में आपका सम्पर्क गुमरगुंडा आश्रम के संस्थापक स्वामी सदाप्रेमानन्द जी महाराज (लखमूबाबा) से हुआ एवं उनके कर कमलों से 1981 में आपने विधिवत् दीक्षा ग्रहण की। तत्कालीन संगठन मंत्री श्री द्वारकाचार्य जी के माध्यम से अ.भा.वनवासी कल्याण आश्रम के कार्य एवं उद्देश्य से आपका परिचय हुआ। 1985 में भनपुरी में 12 छात्राओं को लेकर छात्रावास प्रारंभ किया। 1986 में श्री द्वारकाचार्य के नेतृत्व में दक्षिण बस्तर और दंतेवाड़ा जिले का गहन प्रवास किया। बारसूर को केन्द्र बनाकर महिला जागरण व सशक्तिकरण का श्री गणेश किया। 1986 से 1987 एक वर्ष तक अबूझमाड़ व दक्षिण बस्तर के बीहड़ वन ग्रामों में कुछ सहयोगियों के साथ पदयात्रा कर लगभग 400 गाँवों में वनवासी महिलाओं में सामाजिक चेतना व स्वाभिमान का भाव जगाया। 1987 में 20 वनवासी महिलाओं को लेकर बारसूर में महिला प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की। जिसमें से 12 महिलाएं प्रेरित होकर पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनकर संगठन से जुड़ गईं। वर्तमान में प्रतिवर्ष 15 वनवासी महिलाएं सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, साक्षरता, गृह उद्योग, कुटीर उद्योग आदि में प्रशिक्षित होकर तैयार हो रही हैं। अब तक लगभग 550 महिलाएं प्रशिक्षित हो चुकी हैं। 40-50 गाँवों का एक उपकेन्द्र बनाकर 2 पूर्णकालीन महिला कार्यकर्ताओं के माध्यम से बाल संस्कार केन्द्र, सत्संग केन्द्र, आरोग्य केन्द्र, बचत गट, भजन मण्डली, कल्याणवाहिनी आदि का संचालन कर रही हैं।

बुधरी ताती

1990 में अबूझमाड़ की 11 बालिकाओं को लेकर बारसूर में कन्या छात्रावास का शुभारंभ किया। सामाजिक सहयोग लेकर 2004 में अखिल भारतीय संगठन मंत्री स्व. के.भास्कर राव की स्मृति में बारसूर में एक पक्के महिला प्रशिक्षण केन्द्र (भवन) का निर्माण करवाया।

पुरस्कार व सम्मान

- 7,8 नवम्बर 1998 में नागपुर में भारतीय स्त्री शक्ति पुरस्कार।
- स्त्री अध्ययन प्रबोधन केन्द्र, नातू फाउण्डेशन, पुणे द्वारा 9 जनवरी 2001 को सम्मान।
- पिण्डवाड़ा, राजस्थान में जनजाति समाज की ओर से सम्मान।
- जयपुर में 17,18 सितम्बर 2006 को सामाजिक समरसता सम्मान।

- महिला उत्थान के लिए छत्तीसगढ़ राज्य शासन द्वारा 1 नवम्बर 2007 को मिनी माता सम्मान।
- श्री श्री रविशंकर द्वारा, बेंगलुरु में जनजाति महिला प्रतिनिधि के रूप में 7 जनवरी 2008 को सम्मान।
- अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम महिला कार्यकर्ता सम्मेलन रांची, झारखण्ड, सबल महिला सबल राष्ट्र द्वारा 18 सितम्बर 2008 को सम्मान।
- स्वामी विवेकानन्द सार्ध शती समारोह समिति रायपुर द्वारा 2 अक्टूबर 2013 को सम्मान।
- देवी अहिल्या बाई स्मारक समिति धंतोली नागपुर द्वारा 20 सितम्बर 2014 को रानी माँ गाइदिन्ल्यू पुरस्कार।
- प्रियांशी एजुकेशन कल्चरल एवं सोशल सोसायटी भोपाल द्वारा 9 अक्टूबर 2015 को जगदलपुर में सम्मानित।
- छत्तीसगढ़ सर्व आदिवासी समाज वीरमड़ाई मेला आयोजन समिति राजाराम पठार छत्तीसगढ़ द्वारा 8-9-10 दिसम्बर 2016 को सम्मान पत्र।
- पण्डित सुन्दरलाल शर्मा विश्व विद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़ द्वारा 21 दिसम्बर 2016 को डॉ.ऑफ फिलॉस्फी की मानद उपाधि।
- भारतीय दलित साहित्य अकादमी छत्तीसगढ़ द्वारा महात्मा ज्योतिबा फुले फेलोशिप अवार्ड से 15 अप्रिल 2018 को सम्मानित।
- गोंडवाना समाज समन्वय समिति बस्तर संभाग द्वारा अगस्त 2018 में सम्मानित।

आपके नेतृत्व में विविध सांगठनिक व सेवामूलक गतिविधियों का संचालन हो रहा है। वर्ष में एक बार माँ शंखिनी महिला उत्थान केन्द्र हीरानार में जिला स्तरीय मातृशक्ति सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। जिसमें जिले के सैकड़ों गाँवों से महिलाएं सम्मेलन में एकत्रित होती हैं। इसमें पदाधिकारी बहनों के द्वारा नशामुक्ति, शिक्षा संस्कार एवं स्वास्थ्य के बारे में बताया जाता है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर नन्हे-मुन्ने बच्चों को कृष्ण बनाकर झांकी निकाली जाती है। रामनवमी में 9 दिन तक कलश स्थापना कर सत्संग कथावाचन किया जाता है।

गणेश चतुर्थी में भगवान गणेश की प्रतिमा स्थापित की जाती है। 11 दिन पूर्ण होने पर हवन, पूजन एवं विसर्जन का कार्य बड़े उत्साह के साथ किया जाता है।

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम की कार्यकर्ता के रूप में विगत 23 वर्षों से सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ प्रांत व देश के विभिन्न प्रांतों में आपका सतत प्रवास रहता है। अनेक चुनौतीपूर्ण विपरीत परिस्थितियों का आपने आत्मविश्वास व ईश्वर भक्ति के अन्तर्निहित गुणों के आधार पर डटकर मुकाबला किया। अन्तिम सांस तक वनवासी समाज के जागरण, संगठन व स्वाभिमान की ज्योति जलाए रखने हेतु आप दृढ़संकल्पित हैं।

सेवा व संगठन कार्य के द्वारा आपको आंतरिक प्रसन्नता और संतोष का अनुभव होता है। शांत, धीर, गंभीर, पुरुषार्थी व्यक्तित्व है आपका। हम सब भी आप जैसा, पुरुषार्थी, कर्मठ और राष्ट्र समर्पित जीवन जीने को कृतसंकल्पित बनें।

आपके कर्तृत्व से कल्याण आश्रम परिवार गौरवान्वित है। ❑

NOMINATION FORM

Exemplary Medical Service by Dr Dhanajay Divakar Sagdeo

- Atul Jog
Organiging Secretary ABVKA

It is about three and half decade ago that a young man Dhanajay Divakar Sagdeo arrived in Wayanad. Much before that, miseries and diseases had already descended there crossing the menacing hairpin curves and made the inhabitants helpless. Wayanad in those days had the face of a typical Adivasi old woman confronted with diseases. Subsided wailing was the only remedy in the poor huts in those days. Nobody came forward in those miserable days crossing the labyrinth of red tapes and wipe the tears of the hamlets. It was in that time an MBBS holder Dhanajay heard the call. Born in a moderate family of Nagpur, this young man gave up all the luxuries and followed that inner call. Form that day to this day Sagdeo has dedicated his life to nursing and nurturing the Adivasis.

In the Swami Vivekananda hospital at Muttil, near Kalpetta, Dr. Sagdeo past his middle ages, is still working happily. Sitting in front of him with wonders, at the same time with reverence, in a country where competitions are at large to make all children doctors and engineers, come what may, such a doctor is still existing.

To work as a doctor in a place where it is difficult to get medical treatment - a decision like this was there in the very beginning. After learning about the health problems of Vanavasis, the decision become firm that rest of my life will be with them. When heard about the Adivasis of Wayanad and the Vivekananda Trust, set out towards here. From that day onwards it became the part of my life, this land and its people. In pure Malayalam Sagdeo narrated, in the voice of kindness akin to that of a kindhearted great Physician. Sitting in front of him it came to my mind that this is the person who has a name in the history for bringing forward a complete formula for conquering and resisting Sickle Cell Anemia, a disease which became a great menace to the life of Adivasis of Wayanad.

In the early days, people with miserable poverty came in front of him for treatment. Lack of food and nutrition deficiency was the main problems of his patients, doctor realized very easily. It was also by his insistence that the Trust had decided to look into the welfare activities of the Adivasis. Presently, under the Trust, welfare projects for the social and economic development of Adivasis are in full swing.

It was in 1972 that the Swami Vivekananda Medical Mission had started its dispensary in the backward rural area. In the building donated by the Freedom fighter Shri Radha Gopi Menon the hospital was started. In those days Doctors were rare. There are only facilities enough for treating a small number of patients. In 1980 when Sagdeo arrived, all things changed for the better and he started working for the Mission. Soon, facilities were ready for admitting patients. Here, it is completely free treatment for Janjati people. Now the Medical Mission hospital has grown with 36 bedded hospitals. There are 3 full time doctors including Dr. Sagdeo, 10 visiting doctors and 15 Para medical employees.

Against Sickle Cell Desease

The Sickle Cell disease widely spread among the Adivasis, is first discovered by Dr. Sagdeo. In the early nineties, a lady belonging to Hosur of Karnataka was the one who came to see the doctor with these symptoms. He warned that metamorphosis of the red corpuscles gradually decrease resistance capacity of the patients. When the number of patients increased, he tried to start the work for finding out a prevention method. After contacting the All India Institute of Medical Science at Delhi he made a project to stop this deadly disease. Experts from the AISIMS reached Wayanad and made an investigation. Vanvasis were treated as per their instructions and health cards with different colors were issued. Those affected were given the Red Health card, and not affected, but carrying diseases germs Blue, and the rest were given White cards. Denying those with Blue cards marrying each other was the other instruction given to the patients. Because if they marry; their offspring will become Sickle Cell patients.

Sickle cell patients from Wayanad as well as Karnataka reach here for treatment. However, as a result of the work under Sagdeo's leadership, the spreading of the disease has been contained to a certain extent. For those who became free from this disease a Bamboo products manufacturing unit is functioning close to this hospital building here under the care and control of Sagdeo. Certain of the affected are also working as hospital employees here. Medical camps are conducted at Vanvasi habitats constantly and regularly by the Mission. In a small quarter, close to the Hospital, the Doctor and his family live. Sujatha from the Marathi family of Calicut is the wife of the Doctor. Two daughters Aditi and Gayathri had their study in the schools of Wayanad. Aditi, an Engineer, now lives at Nagpur. Gayathri studies in Mangalore for Medicine. Doctor expects that Gayathri will be a doctor like him who works for the poor and helpless. ❑

PALLIYARA RAMAN THE LIVING LEGEND IN WAYANAD

- Atul Jog
Organiging Secretary ABVKA

Here is the man who stands the test of the time, struggles hard to harness a community together who embraces a long tradition of living in tandem with the harmony of nature, which is rapidly plummeting in to the pitfall of cultural erosion. He is none other than Sri.Palliyara Ramettan for the community and Sri.Palliyara Raman for the larger public. He was born in 1945 at Katharottil Tharavad, Thavinal Panchayat of Wayanad district. He was the eldest son of Shri Chappan and Smt Keera. He started his schooling at Thalapuzha L.P School in 1958. After the demise of his mother in 1958, he went back to his mother's house Palliyara Mittom, Kaniambetta and continued his education at Kaniambetta UP School and then to Panamaram to complete High School studies. During the year 1966 he made Smt Janakaias his life partner, from where he started his life journey. Though he secured a Government job, he didn't continue it for long, left the job for the sake of firming his foothold purely in public arena. The successful election as the Director of Kaniambetta Service Co-Operative Bank in the year1979 helped him to extend to new horizons of developmental arena and to tread to higher echelons of developmental ladder.Sri.Palliyara Raman and the great joint family he heads is the successors of the aboriginal Kurichya community (Vanavasi) who valiantly fought for the freedom of the motherland in align with Pazhassi Raja.Until very recently; the Kurichya community led joint family system and followed matriarchal line of descent. He took a radical step in breaking the fabric of joint holding of landed property prevalent in the joint family system by partitioning the land to each family which instilled their confidence to come in to the mainstream. But they strongly upheld the traditional farming practices which bequeathed to generations to generations as custom and wisdom. They are proud of being the followers of their ancestors who espoused the legacy of loving and conserving nature to keep intact for the posterity.His familiarity with the land and vegetation, in depth understanding of soil and agricultural practices, his concern for upholding the traditional practices of his community of generations won recognition as the son of the soil. His concerted effort has helped to conserve the threaten traditional rice cultivars such as Gandhakasala, Veliyan, Chomala, Thondi and Kayama as treasure trove. A culture close akin to nature nurtured by his community, that which made him to forsake commercial type farming system in total.He is keeping a close touch with MSSRF and associating in their endeavor in promoting agriculture and also continues to be as a patron of MSSRF. He puts his efforts to conserve and commercialize traditional rice varieties which are tolerant to adversities of climate and geospatial variations. He was at the helm of organizing tribes-people under the banner of "Adivasi Sangam" for fighting against the assault and exploitation afflicted up on them. He played a pivotal role in submitting the list 11 emergent needs of tribes-people before the Government in 1972 which became a notable turning point in the history of tribal struggle. He was also the mastermind behind the "sending post card strike" for implementing the above dire needs of the tribes-people.

He organized tribes-people and headed the struggles against landlords and migrants who usurped land from them and also fought against the politically influenced organized forces. He took a pioneering role in organizing protest strikes to bring the issues of tribes-people to the attention of the Government. He has been in the forefront of agitation for not more than five decades for providing surplus land, forest land and the tribal land to the deserved hands. William Logan in " Malabar Manual" narrates that the documents lying in India and England will tell the true history of the ballads of Pazhassi Raja. Until 1970, the patriots like Pazhassi, Thalakkalchandu and Edachana Kunkan have totally become unknown figures. To commemorate them and to place them in the minds of larger national level, he put his earnest effort in materializing the monuments in their names. For this sake, he held the helm of a movement named "Ishtika Samaram" (brick strike) and succeeded in it. 1989 he became the founder of NivedithaVidyaNiketan Institute of Educational Sciences, with the objective of providing basic education to ordinary children, including tribes-children in Kaniyampatta and surrounding areas. He is still actively involving for the advancement of the school. He raised the need for reservation for the tribal communities that have been neglected for generations and succeeded in the effort.The multi-level involvement in different development area will help to reveal about his school of thoughts. The positions he held and is being held under various Institutions will testify his interventions in developmental arena. Varadoor co-operative urban societydirector (1969-1972) Kerala state scheduled tribe advisory board member (2002-2006), founder member of M.Swaminathanreserch foundation (since 1977). He was President of Vanavasi Seva Kedram.(1978-1983), former President of Kerala Forest and Forest Development Center (1999-2014) Adivasi Sangham President (1971-1975), President, State Joint Secretary, Vice President, Welfare Presidency Carried it. By imbibing the energy from generations and harnessing the learning from the life he still working hard for the upliftment of the tribes-people. ❑

DISCOVERING THE CHILD IN YOU

Shishu Mela - 2018

- Snehil Agarwal

21 youths gathered on the morning of 24th November, 2018 at Howrah Station to catch a train to Kharagpur. From Kharagpur, we traveled around 36kms to a remote village named Aharmunda. 360 kids from different villages were in attendance in a ground in the above mentioned village with their teachers. These kids were of an average age of 4-5 years and were students of Shishu Shikhsha Kendras set up by Purvanchal Kalyan Ashram in their villages.

The event began with dividing the 360 students and 21 volunteers from Kolkata in 2 groups. Each student was given a band to tie in their hands which served as an identification of the students. 10 volunteers managed half of the students and organised flat races for them. 15 kids competed in each set. The other set of students were managed by the remaining 11 volunteers. These volunteers further divided themselves and the kids in 3 groups and made them play several fun games like Fire in the Mountain (Pahade Aagun Legeche in Bengali), Khadi Kho, Jal Thal and other games. The winners of the games and races were honoured with prizes and each kid was gifted balls, pencils, biscuits, chocolates and other items. At the same time they were also explained the importance of keeping their localities clean and asked not to throw wrappers in the ground to which they abided instantly. The teachers were also made to compete in a flat race.

The thing that fascinated us the most was the speed of the students as well as the teachers. These kids aged 4 years ran faster than us. The sarees of the teachers was no hindrance to them while sprinting. 360 kids to be managed by mere 21 volunteers seemed to be a difficult task but the event unfolded very smoothly, thanks to the discipline of these kids.

The sports day ended by 2pm. Firstly, the kids were fed and then the volunteers. The menu of the lunch was authentic Bengali Khichdi with a preparation of local vegetables, chutney, salad and fried papad. The volunteers enjoyed the meal to the level of licking each of their fingers.

Post lunch, we headed to a town named Keshari where we spent the rest of the day and the night. The evening was spent by the volunteers playing the same games that we made the kids play in the afternoon, after which there was a session of a formal interaction between the volunteers and we shared our experiences with each other.

The next morning, we headed towards Tilabon, again a remote village near Kharagpur. 20 more volunteers had arrived there from Kolkata. We were 41 now and had 280 kids to manage. This day was spent like the last day. We also had the pleasure of visiting households in the village which run entirely on biogas for its cooking requirements and used kitchen farming techniques.

Many of the first time attendees of Shishu Mela were impressed with the management of the event. We, as volunteers spent our weekend in the best possible way with loads of fun with the kids and fellow volunteers. Each of us had that little kid in us jumping and enjoying, without any stress of our daily chores and hustle bustle of the city. The dust and dirty clothes didn't discourage anyone of us because these two days made us live our childhood all over again. ❑

STRIVE FOR EDUCATION

- Piyush Agarwal

45 vanvasi students from 8 boys hostel of southern bengal were in kolkata from 22nd till 31st october for receiving coaching in english, mathematics and science. Around 20 volunteers from karyakarta parivar and friends taught these students, taking time out of their busy schedule. Most of the students were attending this coaching program for the first time and were very happy with the gain in knowledge and confidence. They promised to come back again for the next session being held from 18th - 28th december in Kalyan Bhawan. ❑

बोधकथा.....

क्षमा और प्रेम की शक्ति

संत तुकाराम ने जब अपना सब कुछ दीन-दुखियों की सेवा में अर्पण कर दिया, तो एक दिन अनशन की नौबत आ गई। पत्नी ने कहा-''बैठे क्या हो, खेत में गन्ने खड़े हैं। एक गट्ठर बाँध लाओ। आज का दिन तो निकल ही जाएगा।'' तुका महाराज तत्काल खेत में पहुँचे और गन्नों का एक गट्ठर बाँध घर की तरफ चले। रास्ते में माँगने वाले पीछे पड़ गए। तुकाराम के हृदय से करुणार्द्र हो उठा। एक-एक गन्ना निकालकर सबको दे दिया। मांगने वाले प्रसन्न होकर लौट गए। जब तुका महाराज घर पहुँचे, तो उनके पास केवल एक गन्ना बचा था।

पत्नी बेहद भूखी थी। जब उसने महाराज के हाथ में एक ही गन्ना देखा, तो आग बबूला हो गई। तुकाराम जी के हाथ से गन्ना छुड़ाकर उसने उन्हें मारना शुरू कर दिया। मारते-मारते जब गन्ना टूट गया, तो उसका क्रोध थमा। तुका महाराज मार खाते रहे; किन्तु जब गन्ने के दो टुकड़े हो गए, तो हँसते हुए बोले-''देख, तेरे क्रोध से यह काम अच्छा हो गया। गन्ने के दो टुकड़े हो गए। एक तू चूस ले, एक मैं चूस लूँगा।''

क्रोध के प्रचंड दावानल के सामने क्षमा और प्रेम के अगाध-अनंत समुद्र को देख तुकाराम की पत्नी ने पश्चाताप में अपना सिर पीट लिया। तुकाराम जी ने अपनी पगड़ी के पल्ले से उसके आँसू पोंछे और छीलकर सारा गन्ना उसे खिला दिया। सच है क्रोध के दावानल को क्षमा और प्रेम के जल से शांत किया जा सकता है। इन दोनों गुणों की मदद से स्वस्थ और टिकाऊ रिश्ता बन सकता है। प्रेम ही सर्वोच्च मानवीय मूल्य है और क्षमा उसका प्रतिफल। ❑

कविता.....

कंटकमय इस राह में

- लक्ष्मीनारायण भाला

सोच समझकर कदम बढ़ाया
कंटकमय इस राह में,
सेवा-व्रत ले ईश्वर खोजा
दीन-दु:खी की आह में।
कंटकमय इस राह में।। ध्रु.।।

शत-शत वर्षों की यह दूरी,
स्नेह-मिलन की आस अधूरी,
पर न भुलाया स्वधर्म जिसने,
अपनेपन की चाह में।।1।।

भ्रम-भेदों को छोड़ किनारे,
भाई से भाई क्यों न्यारे,
गले लगा ले हाथ पकड़कर,
चलें मिलन की राह में।।2।।

दुर्बलता और कुरीतियों का,
दुश्मन भुना रहे हैं मौका।
ध्वंस करें षड्यंत्र सभी जो,
बाधा बनते राह में।।3।।

जब-जब छल विद्वेष बढ़ा था,
गिरि-कंदर से स्नेह बहा था,
मानवता ने अंगड़ाई ली,
क्रंदन और कराह में।।4।।

जन-जन में विश्वास समाया,
राम-राज्य भारत में आया,
स्वाभिमान जब जाग उठा था,
वानर, भील, मलाह में।।5।।

पत्थर-पेड़-पशु जो पूजे,
सब अपने, कोई ना दूजे,
जड़ चेतन में बसे देवता,
मन दरशन की चाह में।।6।।

स्वार्थ, भोग, पद की अभिलाषा,
डिगा न पाए मन की आशा।
जीवन हो सार्थक इस व्रत के,
आजीवन निर्वाह में।।7।।

Delivering Quality, Powering Lives.

In a short span of three decades, Skipper Limited has rapidly risen to the top. As one of the most preferred brands in the sector, we are committed to delivering true value to our customers.

Manufactured using state-of-the-art processes and materials, all our products conform to international standards & norms. Skipper's product portfolio includes Towers & Distribution structures used for Power Transmission & Lighting, as well as EPC projects and Polymer Pipes & Fittings for water supply & irrigation systems.

Today, Skipper stands among India's largest, and among top 10 globally in terms of manufacturing capacity in the engineering products segment. We are also one of the fastest growing Polymer Pipes & Fittings manufacturing co. in the country.

Skipper Limited

Registered Office:

3A, Loudon Street, Kolkata - 700017, West Bengal, India

T: +91 33 2289 5731/32 | F: +91 33 2289 5733

E: mail@skipperlimited.com | www.skipperlimited.com

SKIPPER Limited

Towers | Poles | Polymer Pipes & Fittings

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road

Bangur Building, 2nd Floor

Room No. 51, Kolkata-700007

Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792

Email : kalyanashram.kol@gmail.com